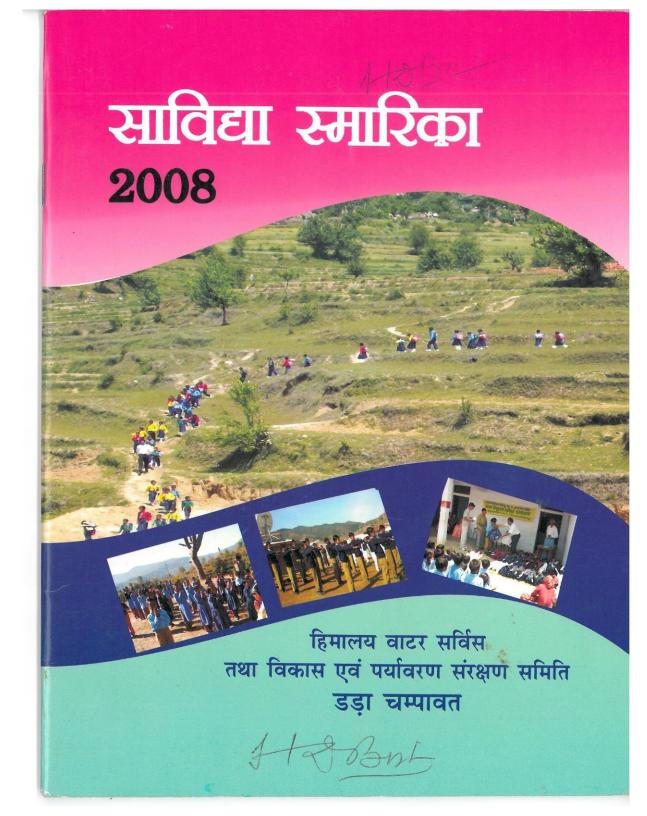
Annual Magazine

Released By

HWSTVAPSS-Savidya

On The Occasion Of

National Science Day (28 Feb 2008)



1 COMPUTER 3 TEACHERS TABLES-CHAIDS GAMES 25 PORTS 6. MUSIC. 4 02000005 UNIFORMS 9 medical \$0 CommiTTEE STRUCTURE 7. MEDALS i ozom पेलिका**नवेलीयु एस** एदारावित्तपोषित R rendrodle Je Four कुलेठी स्कूल की छात्रा एवं माँ गाँव में ( 2007 ) कुलेठी (2005) 50/1 % Personal Tourguithal छात्र पोशाक में (2007) ) कुलेठी स्कूल प्राचार्य, कम्पूटर, श्री बच्ची मिंह रावत, सांसट (2006) जिलाधिकारी द्वारा कुलेठी स्कूल का निरीक्षण (2006) डॉ॰ एच.डी. बिष्ट, जिलाधिकारी, जि.शि.अ., बी.एस.ए. आदि के साथ कलेठी में (2006) Efficiency: Feb 15 - Feb 22 sporonte skeb 28 5 mo f 12 nergy by instrement of Intronstal foratural wal for stake willing. Drocont

Gradia 200 m (6-14) 35 m (out godrof) 2003 60 % (mach v1) 9% (1214) साविद्या स्मारिका 2008

मुख्य आवरण : ऊपर से नीचे, बायें से दायें कुलेठी डूंगरासेठी स्कूल के लिये खेतों से होकर आते हुए विद्यार्थी। 2,3,4 बच्चे बैग वितरण के समय (2007)

Jan 23 (Read Confrontin Feb - 15th and Concernin Ducount Feb 22, 2008 Smarka

? Cookay Gas. Cylinde to Kulth 2) 2 Cemputers to KK

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति

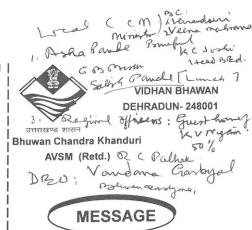
3) Best teechers award ( Donate per land ). 47 Science Cuter Expuryment . 57 Satish Pandle & - Limch -

	Internatived " Waterul	and
	The Raman (Nobal Prizablism)	K.N. Bratt Ltgen (Reld)
	(1) ? ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( )	500 I much sort
	1) 1 R Or. Tapore (45 17 1941)	D 4 8227
	1117 Mother Gresa (1910-1997)	Taj
क्र.सं. 	1V) ma curie (1867-1934) Polan France	पेज संख्या
1.	High VI) Itan Grand Kharana (1922)	(i-V)
2.	HHUIGAPIU Monarga Kor Ser (1933)	1-2
3.	सचिव की कलम से कि श्वार ।	3-12
4.	शिक्षकों के लिए आचार संहिता	13
5.		
6.	सर सी.वी. रमन का जीवन वृत्त ज्ञिल्ला है कि नवीनतम् सात आश्चर्य के प्रकारक राज्ये राज्ये स्वान्द्रनाथ टैगोर्	gadia 15
7.	गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर	16
8.	मदर टैरेसा मेरी क्यारी	Scientit ) 17
9.	मैरी क्यूरी	17
10.	सुब्रमन्यन चन्द्रशेखर 🔍	18
11.	हरगोविन्द खुर्राना	18
12.	अमर्त्य कुमार सेन	19
13.		20 1 7
14.	आदर्श विद्यालय	21-22 & //3
15.	प्राथमिक शिक्षा	23-25 - 3
16.	शिक्षा का बदलता स्वरूप	26 - 4
17.	सुभाषितानी	27
18.	प्राथमिक शिक्षा की दुर्दशा	28-29 ~ 🕒
19.	आदर्श प्राथमिक विद्यालय कुलेठी, चम्पावत	30-33 - 6
20.	आशा फॉर एजुकेशन एक परिचय	34-36
21.	फाउन्डेशन फॉर एक्सीलंस (AFE) छात्रवृत्तियां	37-38 cw7
22.	जल की उपयोगिता एक मुख्य बिन्दु	39-40 - Dela
23.	हिमालयन वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण	41 (7/4)(/6)(/6)
	संरक्षण समिति	27 Cm
24.	विज्ञापन 1-9 Jan 9 - H. Ke	42-48 - (7/7) 8-27-1910 (midler land
	5-7 (7861) R. M. Cogure	5 chandrally 5 56.
	1	Asam 11-3 (1933)

Area: Governor (Local, RAJ BHAVAN HYDERAVAD-500 041 PRESS SECRETARY TO GOVERNOR ANDHRA PRADESH voiha la nume O. G. gayola Breenton newsurs Doners **MESSAGE** 

> Pradesh desires to convey his good | Day and organizing a seminar on wishes for the success of Improvement in Elementary "NATIONAL SCIENCE DAY" | Education, Social Development SAVIDAY THROUGH SIDDHA and Application of Science on JAGARAN SEVA SAMITHI to be February 28, 2008. held on 28th February, 2008.

**Press Secretary to Governor** 



I am glad to note that Himalaya Water Service Tatha Vikash Avam Paryavaran Sanrakshan Samiti, Champawat The Governor of andhra is celebrating National Science

> Wish all success to the event and publication of Souvenir to highlight the needs of the society and the children on the occasion.

> > (Maj. Gen. B.C. Khanduri)

Laye Busel -

12-11-1930 (NL TO WR)

Deca: D. , D G. D, Vilerom Serebler Fallow,

National Physical Lavoratory
Dr. K.S. Krishnan Marg,
New Delhi- 110012



Lar Bist:

I am very happy to know that you have taken the lead to celebrate the science day at Goral Chor Champawat on February 28, 2008. Coming form Champawat District, I fully realize the excitement this celebration will create amongst young students there. It will be a great occasion for these students to go through the experience of enjoying experiments in science. The children from Hills are intelligent, hardworking and sincere. This function will motivate them to work harder. Being part of this celebration would be an unique experience for these children. They will be exposed to quality experiments. Many of the schools in the region do not have proper science laboratories. Soul of science lies in experiments. I do hope that science day elebration at Chapawat would enthuse some bright students. They would definitely take more interest in science after this exposure. You should also have some good scientist's interact with them. This will pave the way for their fascination with science.

I must congratulate you and other colleagues of yours. for taking this initiative. This is something valuable that you are doing. I have to be at Bhubaneshwar that day, otherwise I would have come. My advice to the children is that <a href="they should work hard and with">they should work hard and with</a> sincerity. They will do great thing with hard work and self confidence.

With Regard,

Your Sincerely

S.K. Joshi

(S.K. Joshi)

एस.के. जोशी नेशनल पिफजिकल लैवोरेटरी डा० के. एस. कृष्णन मार्ग नयी दिल्ली — 110012 दि० 13.02.2008

प्रिय बिष्ट.

यह जानकर मैं अत्यन्त हर्षित हूँ कि आपने गोरलचौड़, चम्पावत में 28 फरवरी 2008 को विज्ञान दिवस के आयोजन की अगुआई की है। स्वयं चम्पावत जनपद का निवासी होते हुए मैं भली–भांति अनुभव कर पा रहा हूँ कि इस समारोह से यहाँ के युवा विद्यार्थियों में कितना उत्साह उत्पन्न होगा।

छात्रों में आई०आई०टी० कानपुर के वैज्ञानिकों द्वारा प्रदर्शित प्रयोगों से अद्भुत् आनन्द की अनुभूति हो सकेगी। पहाड़ों के छात्र कुशाग्र, मेहनती और निष्ठावान होते हैं। यह कार्यक्रम उन्हें और कठिन परिश्रम के लिए उत्साहित करेगा। इस समारोह का भागीदार बनना इन बच्चों के लिए एक अनूठा अनुभव होगा। वे स्तरीय प्रयोगों से रुबरू हो सकेंगे। क्षेत्र के अनेक विद्यालय भी वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं से वंचित हैं। विज्ञान की आत्मा प्रयोगों में निहित हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि चम्पावत का विज्ञान दिवस समायोजन कितपय मेधावी छात्रों को उद्देलित करेगा। इस अनुभव के बाद वे छात्र निश्चय ही विज्ञान में अधिक रूचि प्रदर्शित करेंगे। आप को इन छात्रों के साथ संवाद स्थापना हेतु कुछ स्थानीय वैज्ञानिकों की भी व्यवस्था करनी होगी। इससे विज्ञान के प्रति उनमें गहरे लगाव का सूत्रपात हो सकेगा।

मैं आपको और आपके अन्य सहकर्मियों को आपकी इस पहल पर बधाई देना चाहूँगा। यह एक अनमोल कार्यक्रम है मुझे उस दिन यदि भुवनेश्वर में होना है अन्यथा मैं स्वयं उपस्थित रहता।

छात्रों को मेरी सलाह है कि उन्हें निष्ठापूर्वक कठोर श्रम करना चाहिए, कठोर श्रम से वे महान कार्य कर सकते हैं।

भवदीय

इ. ४. १००० (एस०के० जोशी) R.C. Pathak,

I.A.S

3 P.S. Gosevi

Ciri

) Goral Char Forest Guest House 27 Sunt Hous 1 Kumaon Vale Manda

District Magistrate,

Champawat. (Uttarakhand)
Tel- Office: 05965-230285 Res: 230275

Dated - Feb 21, 2008

Fax: 230295



Message

Sri Tribhuwan Kumar Bist, approached me in my Office and apprised of the activities being taken up by the N.G.O. HWSTVAPSS in our district. The contribution of N.G.O.'s in creating environment in the field of social upliftment, preservation of earth's ecology, general awareness, educational advancement of society is well recognized and expressly highlighted sector in our country now-a-days

I am glad to know that this Samiti is organizing "Science day activities" on 28 th Feb 2008, dedicating this day to Dr. C.V.Raman.

I wish all success for this event.

Sd.

(R.C.Pathak)
District Magistrate
Champawat.

Area Prendent





Amrapali Institute

Shiksha Nagar, Lamachaur, Haldwani Off.: 05946-238201, 238202 Fax: 05946-238205 e-mail:aimca@ vsnl.com Website: www.amrapalinstitute.info



10 नवम्बर 1997 में हिमवत्स की स्थापना के साथ संस्था के प्रथम अध्यक्ष डॉ0 एच.डी. बिष्ट (आचार्य आई0आई0टी0, कानपुर) सेवा निवृत्ति के उपरान्त भी अपने शोध एवं लेखन कार्यों में रत रहे। 2004 में सी.एस.आई.आर तथा ए.आइ.सी.टी.ई. के मानद पदों से निवृत्त होने के बाद उन्हें सचिव एवं श्रीमती आशा बिष्ट को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया।

सचिव का प्रभार ग्रहण करने के साथ ही डाँ० बिष्ट ने समिति को विस्तृत धरातल पर लाने का प्रयास किया। 2004 में स्वयं मैं भी समिति की गतिविधियों से जुड़ गया।

मेरे अध्यक्ष बनने एवं डॉ० बिश्ट के सचिव पदभार ग्रहण करने के साथ ही डॉ० बिष्ट के प्रयासों से सिमिति को आशा फॉर एजूकेशन के स्टैनफोर्ड एवं सिलीकॉन वैली चैप्टर्स से सहायता मिली। 2005—2006 में सिमिति का कार्य कई गुना बढ़ गया। 2006—2007 में एवं अभी हाल में भी और तीन—तीन गुना वृद्धि हुई। भविष्य में यह नए आयाम में प्रवेश करेगा।

यह संस्था उत्तराखंड में बुनियादी एवं प्राथमिक शिक्षा क्षेत्र में आमूल परिवर्तन करने तथा छात्र—छात्राओं, अध्यापक, माता—पिता, अभिभावकों के सर्वांगीण विकास हेतु कटिबद्ध एवं प्रतिबद्ध हैं।

मैं स्मारिका के प्रकाशन से हर्शित हूं एवं इस अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं तथा आशा करता हूं कि सभी के सहयोग से संस्था अपने उद्देश्यों को पूरा कर पाएंगे।

N

0

के.के.पाण्डे अध्यक्ष, हिमवत्स (निदेशक, आम्रपाली इंस्टीट्यूट)

हल्द्वानी

(iv)

15 Local Cultural Program 1st Page,

11) Tracel quadra Page 19.

Redande Deta Principal DIBT

Inch gel Boon P

Janandan Book Sauz:

Suresh Joshi (Salakhol)

Telak Raj Joshi (Pailher)

Manche Lel Sel (Director Confay Laws)

Principal (GOI.

Popula school)

## सम्पादकीय

प्रस्तुत स्मारिका का संयोजन/सामग्री संकलन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के सुअवसर पर किया जा रहा है। यह आयोजन साविद्या उपसमिति की सिद्ध जागरण सेवा की प्रेरणा से ही संभव हो पाया है। प्रसंगतः राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का राष्ट्रव्यापी आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के धनी, प्रख्यात भारतीय भौतिक विज्ञानी, सर चन्द्रशेखर वेंकट रमन, के जन्म दिवस के अवसर पर किया जाता है। श्री रामन अपनी विलक्षण खोज हेतु भौतिक विज्ञान में नोबेल सम्मान से विभूषित किये गये थे। उसी प्रसंग में भारतीय मूल के अन्य नोबेल पुरस्कार से सम्मानित विभूतियों का संक्षिप्त परिचय भी स्मारिका में सिम्मिलत किया गया है। और स्वयं डॉ. रामन का जीवन वृत्त भी।

प्रस्तुति के क्रम में प्रथमतः आन्ध्रप्रदेश के राज्यपाल महामिहम नारायण दत्त तिवारी का शुभकामना संदेश, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री माननीय मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूरी का संदेश प्रख्यात भौतिक विज्ञानी डा. एस.के. जोशी का संदेश, संस्था के वर्तमान अध्यक्ष आचार्य के.के. पाण्डे की शुभकामनायें भी हैं।

तदुपरान्त क्रमवार संस्था के वर्तमान सचिव, डा. एच.डी. बिष्ट की कलम से हिमवत्स समिति तथा साविद्या उपसमिति की संस्थापना से लेकर वर्तमान तक की गतिविधियों, कार्यक्रमों की वर्षवार प्रस्तुती भी है। स्मारिका को धीर—गंभीर स्वरूप प्रदान करने में विशिष्ट चिन्तक, लेखक एवं प्रेरक श्री बी. डी. गुरूरानी के एकाधिक आलेखों ने अतिशय महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। राजकीय प्राथमिक आदर्श पाठशाल, कुलेठी, चम्पावत की प्रधानाध्यापिका, सुश्री आशा पाण्डे, ने भी स्मारिका को अपनी रिपोर्ट एवं लघु आलेख के माध्यम से संग्रहणीय बनाया है।

श्री संजय बिष्ट ने छात्र—छात्राओं एवं शिक्षकों हेतु क्या और कैसे, क्यों करें या न करें से स्मारिका में अतिरिक्त आकर्षण जोड़ा है। राष्ट्रीय महिला पत्रकार, सुश्री शीला पन्त ने एक अत्यन्त सामायिक एवं सारगर्भित लघु आलेख के माध्यम से स्मारिका का कलेवर और तेवर तय करने में हमारी मदद की है। श्री कृष्ण कुमार मिश्र ने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व, जल, में विचारोत्तेजक भावाविव्यक्ति की है। पाठकों की सहजता के लिए संदेशों के बाद ही प्रस्तुतियों की क्रमवार अनुक्रमणिका भी दी गयी है। संस्था की ओर से निर्गत साविद्या शिक्षक / प्रशिक्षकों हेतु आचारसंहिता के बिन्दु भी रेखांकित किये गये हैं। हिमवत्स एवं साविद्या के कार्यकारिणी एवं सामान्य सदस्यों की नामाविलयां, चम्पावत के स्थानीय सदस्यजनों की सूची, चिकित्सकीय सदस्यों के नाम तथा समस्त दानदाताओं के नामों की सूची को भी साभार प्रकाशित कियां जा रहा है। यथास्थान विज्ञापनों को भी प्रकाशित किया गया है।

हम विशेष रूप से आम्रपाली इन्स्ट्ट्यूट के प्रबन्ध, विविध संकायों के आचार्यों, सुश्री जया बिष्ट, गोपाल शर्मा तथा संस्थान के निदेशक डा. के.के. पाण्डे के आभारी हैं जिनके अनथक सहयोग के अभाव में स्मारिका का अस्तित्व में आना सम्भव ही न हो पाता। इन सभी ने अपने अतिशय व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद हमें समस्त सुविधायें तथा सहयोग दिया। हम संस्थान के उन सभी कर्मचारियों का भी आभार

स्वीकार करते हैं जिन्होंने हमें पूरा-पूरा साथ दिया। सर्वश्री सतीश पाण्डे, आर.डी. जोशी एवं जी.बी. बिष्ट उनके अतुलनीय योगदान के लिए हमारी कृतज्ञता के पात्र हैं। विशेष रूप से स्मारिका के संयोजन कार्य के लिए अपनी अन्य व्यस्तताओं से समय निकाल कर रात-दिन सुलभ रहने के लिए त्रिभुवन कुमार बिष्ट (टी.के.) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

डा. ओ.पी. गंगोला, श्रीमती गीता शांह के साथ ही उनके विशेष योगदान के लिए हम त्रिलोक सिंह बिष्ट को धन्यवाद देते हैं। यह स्मारिका इन सभी का समवेत प्रयास है।

अंततः हम अपने समस्त सहयोगियों, दानदाताओं का फिर उनका सहयोग चाहे किसी भी रूप में क्यों न रहा हो, आभार मानते हुए अपने कार्यक्रमों / गतिविधियों के भविष्य में विस्तार की कामना के साथ स्मारिका आप सभी को सौंप रहे हैं। प्रस्तुति की समस्त त्रुटियों के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

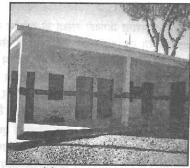
> मुक्तेश पन्त प्रधान सम्पादक



साविद्या सूचना पट एवं चम्पावत का नैसर्गिक वैभव



डॉ गो.ब. बिष्ट द्वारा बच्चों का टीकाकरण



कुलेठी विज्ञान साधन केन्द्र (2008)



सुभाष नगर में छात्रों के स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन

Help all Schools (19), And students

Bened Seth general (GOI); Micro, small & medium industries.

Blematon Reducation, OB

Want Townsin;

Had of port Hamber & Swan clausen.

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति का विवरण तीन सोपानों में दिया गया है।



( xess Conference

- 1. पूर्ववृत्त (1997-2004)
- 2. परियोजना के प्रस्तावित कार्य बिन्दु (2004–2005)
- 3. साविद्या उपसमिति की पहल (2006-2008)
- 1. पूर्ववृत्त (वर्ष 1997-2004) :

स्वै0 श्री अम्बादत्त (ग्राम प्रधान) के अथक प्रयत्नों द्वारा ग्राम डड़ा कुलेठी में मौन–घाड़ क्षेत्र से पानी लाकर, भैंसखाल में मुख्य टंकी बनाकर पेयजल उपलब्ध करवाया गया। समय के साथ पानी की आवश्यकता बढ़ती गयी और

--डॉ० एच०डी० बिष्ट

वह पानी जो (1965 के पास) दोनों गांवों के लिए पर्याप्त था, 1980 तक बहुत कम हो गया। इससे क्षेत्र की अन्य समस्यायें भी ज्वलन्त बनने लगी। इस स्थिति को देखकर कुछ लोगों ने 10.11.1997 को "हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति ग्राम— डड़ा" का गठन किया। इस संस्था के उद्देश्य विविध समस्याओं (जो जनपद चम्पावत में हैं) के समाधान करने हेतु रखे गये। डाँ० गोबिन्द बल्लम बिष्ट के प्रारम्भिक प्रयासों से इस संस्था का प्रथम रिजस्ट्रीकरण 10.11.1997 में हुआ। तब से नियमित रूप से सीमित स्वसाधनों के बल पर केवल शुद्ध जल ग्रामवासियों को मिले, इसका प्रयास किया गया। विगत् वर्ष वृहद पेयजल योजना को प्रबल सहयोग देने से इस क्षेत्र में पेयजल की (सारे ग्रामवासियों के लिए) कुछ समय के लिए समस्या हल हो चुकी है। अभी तक कतिपय समस्यायें मृंह बायें खड़ी हैं।

26 मार्च 2004 में इस संस्था का शाखा कार्यालय (जो इसकी "साविद्या उप समिति"का मुख्य कार्यालय होगा) 14/35, जी०बी०पन्त मार्ग, तिकोनिया, हल्द्वानी में खोला गया और संस्था का कार्यक्षेत्र उत्तराखण्ड घोषित किया गया। इसके कार्य हेतु संस्थाध्यक्ष डाॅ० हरिदत्त बिष्ट का सहयोग और मार्गदर्शन उपयोगी होगा, माना गया।

#### 1.1 अभिप्राय:

वर्तमान समस्यायें, अवधारणाओं, परिस्थितियों के सुधार में योगदान देकर एक शोषण मुक्त एवं भ्रष्टाचार रहित समाज उत्तराखण्ड में बनाना, महिलाओं का स्वावलम्बन एवं उनको सशक्तीकरण, आर्थिक एवं सामाजिक योगदान देना, गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य रक्षा में विशेष ध्यान देना है।

### 1.2 मिशन:

ग्रामीण समाज से ही युवाशक्ति, नारीशक्ति और पिछड़े वर्गों को सम्मिलित कर समस्याओं के

समाधान में सहयोग करना और उनके सर्वांगीण विकास द्वारा उत्तराखण्ड को एक सम्पन्न, आदर्श राज्य बनाने की दिशा में सहयोग करना, शिक्षा को प्रमुख साधन मानने की अभिप्रेरणा से "साविद्या उपसमिति" की स्थापना की गयी जिसमें वर्ष 2004 के अंत तक 2 लाख रूपया फिक्सड डिपॉजिट में रखकर उसके ब्याज को योग्यता एवं आर्थिक आधार पर रोजगारपरक कार्यों के लिए प्रशिक्षण में योगदान किया जायेगा ताकि पर्वतीय पलायन रोका जा सके। इस कार्य हेतु माइक्रो—पर्यटन की भी कल्पना की गयी।

### 2. परियोजना के प्रस्तावित कार्य बिन्दु (2004-05)

#### 2.1 पर्यावरण जागरूकताः

इसके अंतर्गत भू—स्खलन, भूकम्प, ओलावृष्टि, बादल फटने जैसी अन्य समस्याओं, अन्य पर्यावरण विषेयों, ऊर्जा स्रोतों का उपयुक्त प्रयोग करने में सहायता करना, प्रौढ़ शिक्षा में अर्जित धन का सदुपयोग इसका पाथेय होगा, पर्यावरण में पुस्तकें भी प्रकाशित की गयी।

#### 2.2 जन जागरूकता एवं व्यसन मुक्ति :

इसके प्रचार—प्रसार, प्रशिक्षण तथा रचनात्मक कार्यक्रम एवं अन्य विविध अभियान वर्ष भर जारी रहेंगे। बाह्य विशेषज्ञों और स्थानीय अनुभवी लोगों, वरिष्ठ नागरिकों, स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से कुप्रथाओं जुआ, शराब, आतिशबाजी को रोकने का प्रयास किया जायेगा। बाद में सिद्ध जागरण सेवा इसका विस्तृत रूप उभर कर आयेगा।

### 2.3 जड़ी-बूटी एवं पौधारोपण और परिरक्षण :

रचनात्मक कार्यों, किलमौड़ा, बांज, फल्याट, फल-फूल पौधारोपण आदि कार्य उचित समय पर मुहीम चलाकर किया जायेगा। प्रकृति के अनुचित दोहन को रोकने का प्रयास किया जायेगा। स्थानीय उपजों (मट्ट, गहत, मिर्चा, आलू आदि) के और फलों (नाशपाती, सेब आदि) के परिरक्षण द्वारा आर्थिक उन्नयन में सहायता का ज्ञान विशेषज्ञों द्वारा करवाया जायेगा। कृषि एवं सिंचाई के साधनों का नवीनतम ज्ञान भी दिलवाया जायेगा। सिंचाई के लिए वर्षा के पानो का उपयोग (तालाब और वृहद टंकी बनाकर) करवाने की महत्ता से अवगत कराया जायेगा। इस कार्य हेतु पर्यटन मंत्री 2008 ने अभिरुचि प्रदर्शित की है।

### 2.4 सामाजिक सशक्तीकरण एवं भ्रष्टाचार निवारण :

गोष्ठियां, विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण व कार्यशालाओं का आयोजन करवाया जायेगा। स्थानीय समस्याओं में क्षेत्रीय लोगों का प्रमुख योगदान करवाया जायेगा। गोष्ठियों द्वारा ज्ञान दिलाकर महिलाओं को सशक्त किया जायेगा। नीति—निर्माताओं पर निगरानी रखकर गुणवत्ता तथा प्रमाणिकता पर ध्यान देने की व्यवस्था की जायेगी। इस प्रकार भ्रष्टाचार निवारण में महिलाओं की अहम भूमिका रहेगी। पर्यटन उद्योग में भी महिलाओं की भूमिका पर्वतीय क्षेत्रों में निर्देशित की जायेगी। सचिव ने इस भ्रश्टाचार की विभीषिका विषय में एक पुस्तक का सम्पादन किया है।

### 2.5 जन स्वास्थ्य जागरूकता एवं आयुर्वेदिक ज्ञानः

ग्रामीण महिलाओं को हर प्रकार का ज्ञान (मातृत्व, नागरिक और संभ्रान्त व्यक्तित्व) का आभास

करवाया जायेगा और जागरूक बनाया जायेगा। आंख, कान, हृदय रोगों आदि की जानकारी एवं निराकरण स्वास्थ्य शिविरों द्वारा की जायेगी। डॉ० गो० ब० बिष्ट नेत्र शल्य चिकित्सा के क्षेत्र को काफी आगे ले गये हैं।

#### 2.6 अल्प बचत एवं शारीरिक श्रम की महत्ता :

संगठनात्मक विकास के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूहों की क्षमता व नेतृत्व हेतु मार्गदर्शन व प्रशिक्षण के लिए शिविर आयोजित किये जायेंगे। पुरुषों में खाली समय पर धनार्जन वाले कार्यों में लगाने की मुहिम महिलाओं द्वारा करवायी जायेगी। स्कूलों में श्रमदान कर रख-रखाव को बढ़ावा दिया गया है।

#### 2.7 घरेलू एवं सामाजिक कार्य :

सिलाई—बुनाई, महिला पंचायती राज प्रतिनिधि सम्मेलन, कृषि वानिकी विकास, संयुक्त वन प्रबन्धन, स्वर्ण जयन्ती स्वरोजगार योजना का प्रचार—प्रसार, कृषि विविधिकरण परियोजना, उद्यान योजना, पशुपालन, डेरी योजना, पंचायती राज जागरूकता एवं सशक्तिकरण अभियान में भाग लिया जायेगा, गोष्टियां और विचार मंथन प्रयासों द्वारा महिलाओं से योगदान करवाया जायेगा। यह कार्य रोजगार परख प्रशिक्षण द्वारा किया जायेगा।

#### 2.8 विकास कार्यों का ज्ञान :

महिलाओं के लिए भारत एवं प्रदेश सरकारों द्वारा चलायी गयी स्वावलम्बी, प्रशिक्षण एवं रोजगार की स्वाधार, कामकाजी महिला हॉस्टल एकीकृत वित्त विभाग, बीस सूत्रीय कार्यक्रम, प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना आदि का ज्ञान करवाने का प्रबन्ध करवाया जायेगा। 20 से 40 वर्ष से कम और उससे अधिक उम्र की महिलाओं के लिए भिन्न कार्यक्रमों की व्यवस्था की जायेगी। विभिन्न प्रयासों को जन—जन तक पहुंचाने के लिए एक मुख्य पत्र का प्रतिपादन भी किया जायेगा। यह प्रकाशन इस कड़ी में पहला प्रयत्न है।

### 2.9 बाह्य संस्थाओं से सम्बन्ध

अन्य राज्यों और केन्द्र सरकार की गतिविधियों से स्थानीय महिला समूहों को परिचित करवाया जायेगा। भौगोलिक स्थिति के अनुसार परिवहन एवं संचार एवं शिक्षा में ध्यान देकर गांव शहर की जिन्दगी में अन्तर समाप्त कर युवकों को ग्रामों से पलायन रोकने के कार्य में सहायता दी जायेगी। कितपय संस्थानों विशेषकर आम्रपाली इंसिटेट्यूट से निकटतम सम्बन्ध बनाये गये हैं।

#### 2.10 साविद्या अनुदान :

साविद्या उपसमिति के द्वारा अर्जित साविध जमा राशि के ब्याज व अन्य अनुदानों को उनकी उपनियमावली के अधीन किया जायेगा।

तत्कालीन संस्था के अध्यक्ष डाँ० एच०डी० बिष्ट का विभिन्न शासकीय, अर्द्ध शासकीय विभागों, अन्य प्रतिष्ठानों, स्वैच्छिक संस्थाओं और संगठनों का अनुभव व व्यक्तिगत् परिचय उपरोक्त कार्यों में से जिन कार्यों के लिए अनुदान प्राप्त होगा, उनको करवाने में सहायता करेगा।

नव सृजित उत्तराखण्ड में महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास द्वारा अनुदान मिलने पर जिले के एक प्रमुख भाग की समस्त निराश्रित एवं कमजोर महिलाओं में आत्म विश्वास की रक्षा, पारिवारिक विकास एवं उत्तरजीविका का उन्नयन करने में सक्षम हो सकेंगे और अपनी क्षमता निर्माण कर आर्थिक एवं सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकेंगी।

#### 2.11 आय व्यय का श्रोत एवं पद्धति

वर्ष 2004 तक व्यक्तिगत् अनुदान और सदस्य शुल्कों से उपार्जित आय ही एक श्रोत रहा है। इसके द्वारा स्थानीय पानी का शुद्धीकरण ही प्रमुख सेवा कार्य हो सका है। सदस्यों के प्रयास से ग्राम सभा डड़ा—कुलेठी में नयी योजना के अंतर्गत ग्राम सभा डड़ा कुलेठी में पेयजल की सुविधा इस संस्था का प्रमुख अंशदान माना जा सकता है। समय के साथ आशा फॉर एजुकेशन और भारत सरकार की अन्धता निवारण कार्यक्रम का सहयोग बढ़ता गया। सारा व्यय निर्धारित कार्यों में ही किया जाता है।

इन्हीं कार्यक्रमों को अन्य गोद लिये हुए अथवा लिये जाने वाले विद्यालयों के लिये आदर्श माना जाना चाहिए।

### 3. साविद्या उपसमिति की पहल (2006-2008)

साविद्या उपसमिति की वर्तमान लक्षित पांच आधार दिशाओं में पहली आदर्श सरकारी पाठशालाओं की स्थापना एवं विस्तार, दूसरी रोटेटिंग पुस्तकालय तथा विज्ञान संसाधन केंद्र स्थापना, तीसरी शिक्षकों की निरंतर प्रशिक्षा एवं प्रशिक्षण, चौथी सिद्ध जागरण सेवा कार्यक्रम और पांचवीं रोजगारपरक प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्धारित हैं।

उपरोक्त आधार पर ही समिति सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। समवेत रूप से इन्हें लेकर ही प्राथमिक से लेकर हाईस्कूल तक छात्र/छात्राओं का सर्वांगीण विकास सम्बद्ध विशेशज्ञों द्वारा किया जा रहा है। हमें विश्वास है कि सरकार एवं स्थानीय जन इन प्रक्रियाओं से परिचित हो सकेंगे और इन कार्यक्रमों को अपने विद्यालयों में, जहां केवल निर्धन एवं साधनहीन छात्र अध्ययनरत हैं, अपनाकर लाभ उठा सकेंगे।

3.1 आदर्श सरकारी पाठशालाएं— पठन—पाठन, खेलकूद, व्यायाम एवं संगीत का उपयोग अन्य स्थानों पर भी प्रधान अध्यापिका की रिपोर्ट में आ चुका है। सूक्ष्म वर्णन इस दिशा का कुलेठी स्कूल में दिया गया है। कुलेठी (चम्पावत, उत्तराखंड) में स्थित प्राथमिक विद्यालय ऐसा पहला प्राथमिक विद्यालय है जिसने किसी भी प्रकार के कोलाहल और बाधाओं से दूर अपनी सीमा निर्धारित की है। विद्यालय के सभी कमरे बिजली की सेवा से युक्त हैं जिससे कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम को सहज बनाया जा सका है। साविद्या उपसमिति ने विज्ञान, अंग्रेजी एवं समस्त कक्षाओं में कम्प्यूटर के विशेष प्रशिक्षण हेतु तीन नियमित अध्यापक उपलब्ध करवाए हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अध्यापक सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए गए दो अध्यापकों को अतिरिक्त सहयोग प्रदान कर रहे हैं। अक्टूबर 2005 में अपनी स्थापना के बाद से ही एक खेल एवं क्रीड़ा प्रशिक्षक विद्यालय में उपलब्ध रहा है तथा छात्रों को पुस्तकें सहजता से उपलब्ध करवाने हेतु पुस्तकालय सेवा भी मौजूद है। इस प्रकार सरकार द्वारा

P. Kulelli - 8 2 GJHS DS - 89 Publication 1800 Dimgasidh - 80 (6) KK - 76 Tramp 500 Subdard Nagar 172 537

नियुक्त दो अध्यापकों के अलावा साविद्या उपसमिति द्वारा उपलब्ध करवाए गए तीन अध्यापकों के साथ विद्यालय कुल पाँच शिक्षकों की सेवाओं का लाभ उठा रहा है। साविद्या उपसमिति द्वारा पहली कक्षा से ही कम्प्यूटर प्रशिक्षण सुलभ करवाने के लिए दो कम्प्यूटर दिए गए हैं और यह प्रशिक्षण पूर्ण रूप से प्रशिक्षित कम्प्यूटर प्रशिक्षक द्वारा प्रदान किया जा रहा है। पहला कम्प्यूटर 14 नवंबर (बाल दिवस) 2005 को और दूसरा 23 अप्रैल 2006 को उपलब्ध करवाया गया।

विद्यालय में लड़के एवं लड़कियों के लिए अलग-अलग सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित, टॉयलेटस, भारत सरकार की स्वजल योजन की सहायता से दिसंबर, 2007 को निर्मित किए गए। विविध शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत पाठ्यपुस्तकों को विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध करवा दिया गया है। पुस्तकों को सुरक्षित रूप से अलमारियों में रखा गया है। छात्रों के हित में पुस्तकालय को कम्प्यूटर सीडियों से भी सर्वार्धित किया गया है। भीतर एवं बाहर खेले जाने वाले दोनों ही प्रकार के विविध खेलों के लिए विद्यालय को सुविधाएं दी गई हैं। बॉलीबॉल, बेसबॉल, फुटबॉल, क्रिकेट, बैडिमेंटन आदि के अतिरिक्त कैरम, लूडो आदि की सुविधा विद्यालय में उपलब्ध है। बच्चों के लिए विद्यालय में झूले, सी-सॉ, फिसल पट्टियां, चेप काके झूले, आगे-पीछे चलने वाली नावें दिसम्बर, 2006 से उपलब्ध है। छात्रों को अब तक कुल चार बार पूरी विद्यालय पोशाक (एक्शन जूतों एवं स्वेटरों के साथ) उपलब्ध करवाई जा चुकी है। उन्हें टाइयों, पेटियों एवं मोजे भी उपलब्ध करवाए गए। चौथी बार छात्रों को पोशाक विद्यालय के सदनों के लिए दी गई। 16 जनवरी को चौथा स्वास्थ्य शिविर भी लगवाया गया। छात्रों को उनके स्वास्थ्य संरक्षण हेतु Liv 52 टैबलेट भी दी गई। 500 मिली ग्राम प्रति छात्र प्रतिदिन के हिसाब से कैल्सियम टैबलेट भी सुलभ करवाई गई। हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति (हिमवत्स), प्राथमिक पाठशाला, कुलेठी तथा कन्या माध्यमिक विद्यालय डुंगरासेठी में जो दोनों ही चम्पावत में स्थित हैं साविद्या उपसमिति अपने माध्यम से अपनी निगरानी एवं निर्देशन से लाभान्वित कर रही है।

उपरोक्तानुसार स्थानीय प्रबंधन को सुनिश्चित करना होगा कि:-

- 1. साविद्या उपसमिति द्वारा नियुक्त शिक्षकों की उपस्थिति का रिकार्ड आवागमन के समय के साथ रखा जा रहा है।
- 2. यह सुनिश्चित करना कि छात्र, छात्रायें तथा शिक्षक विद्यालय समय से पांच मिनट पहले विद्यालय में उपस्थित हों।
- 3. छात्रों एवं शिक्षकों को समिति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करना।
- 4. यह देखना कि विद्यालय में शिक्षक समय का सदुपयोग करें व्यर्थ की बातों में समय न बितायें।
- 55. प्रधानाध्यापक के कार्यों में हस्तक्षेप किये बिना सरकारी स्टाफ का सहयोग प्राप्त करना तथा उसका रिकार्ड रखना।
  - ,6. समिति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रधानाध्यापक का भरपूर सहयोग प्राप्त करना।
  - 7. यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्र विद्यालय में प्रतिदिन उपस्थित रहें।

- 8. यदि कोई अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हो तो इस दिशा में प्रयास करना कि क्षेत्र के सभी बच्चे विद्यालय में प्रवेश लें।
- 9. साविद्या द्वारा चम्पावत में समय-समय पर किये जा रहे सभी कार्यों में सहायता करना।
- 10. शीतकालीन / ग्रीष्मकालीन अवकाश के दिनों में साविद्या शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से कक्षाओं में पढ़ाई के साथ—साथ खेलकूद, अन्य मनोरंजन के कार्यक्रम संचालित करना है, स्थानीय प्रबन्धक यह सुनिश्चित करें कि सभी छात्र / छात्रायें उपस्थित रहें।
- 11. िक्षकों की आचार संहिता, पाठन विधि, परीक्षा प्रणाली व अन्य वान्छित गुणों के आधार पर उनका मूल्यांकन करना और रिपोर्ट साविद्या को देना।
- 3.2. 'लर्निंग और विज्ञान संसाधन केन्द्र' का एक हिस्सा रोटेटिंग पुस्तकालय एवं दूसरा हिस्सा विज्ञान केन्द्र है।

रोटेटिंग पुस्तकालय की संकल्पना है कि कुलेटी विद्यालय का वर्तमान पुस्तकालय को विज्ञान केन्द्र से जोड़कर पुस्तकों की संख्या बढ़ायी जाये। अन्य स्कूलों को पुस्तकों भेजी जाये और फिर वापिस मंगवायी जाये। पुस्तकों का लाम छात्रों के अतिरिक्त अन्य जनों को भी दिलवाया जाये। पुस्तकालाध्यक्ष यह सुनिश्चित करेंगे कि पुस्तकों का लाम चारआल के विद्यालयों में बारी बारी से सभी उठा सकें। तदुपरांत पुस्तकें कुलटी पुस्तकालय में यथावत लौटायी जा सकें। विज्ञान संसाधन क्षेत्र केन्द्र भवन में एक से लेकर दसवीं कक्षा तक के छात्रों हेतु आसान प्रयोग रखकर विज्ञान प्रणाली के अनुसार उनका लाभ संभव बनाया जाये। इसमें भी चारआल के अन्य विद्यालयों के छात्र एवं अभिभावक लाभ उठा सकेंगे। विज्ञान केन्द्र 'लर्निंग और विज्ञान संसाधन केन्द्र' का ही एक हिस्सा है। इसका विस्तृत वर्णन विज्ञान की आधारशिला, सम्पूर्ण समर्पण की आवश्यकता एवं वैज्ञानिक प्रणाली के तीन आधार स्तम्भों खोज, शोध और बोध के साथ किया गया है। विज्ञान केन्द्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की उपादेयता निम्न कविता में निहित है:

में निहित है: क्यों, कहाँ और कब से, तन, वैचन और मन से, आत्मा, स्वाभाव प्रकृति के, त्रुटिग्राफ आंकड़ों के, सहयोग भावना से.

क्या, कौन और कैसे? कर्म, ज्ञान और ज़हन से देख, लेख अभिरूचि से निष्कर्ष समूहों से, क्यों, कहाँ और कब से?

कौतूहल, जिज्ञासा का यही मूलमंत्र वैज्ञानिक अनुसंधान का आधार है।

1988 से भारत सरकार राष्ट्रीय विज्ञान दिवस भारत के महान वैज्ञानिक डॉ० चन्द्रशेखर वैंकट रमन के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित करती आ रही है। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में यह महापुरूष भारत को विश्वपटल पर लाने वाले प्रथम पुरूष थे। इन्होंने अपनी सारी खोज भारतीय परिवेश और परिस्थितियों में रह कर ही की थी। नोबेल पुरस्कार प्राप्त इस वैज्ञानिक ने अपने नाम से विख्यात "रामन प्रभाव" को 200 रू० से कम खर्चे लागत के उपकरणों से अपनी विलक्षण दूर दृष्टि और शोध के

L & 3 RC - (8)500/-

आधार पर किया था। 28 फरवरी 1988 "रामन प्रभाव" की शष्टिपूर्ति को ही विज्ञान दिवस आयोजन के लिए चुना गया।

तुकबन्दी की दूसरी और तीसरी पंक्तियाँ पूर्ण समर्पण भाव को प्रदर्शित करती है। वास्तविक ज्ञानोपार्जन के लिए केवल " चॉक" और "टॉक" (दृष्टि एवं श्रवण) के अलावा सम्पूर्ण शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि एवं आत्मा की तल्लीनता अपेक्षित है। संकलित ऑकड़ों का नियमित संचय, उनमें निहित त्रुटियों को ग्राफ अथवा गणना द्वारा मूल्यांकन करना आवश्यक होता है। अनेक बार पुनरावृत्ति के माध्यम से निष्कर्षों की पुष्टि, जन सहयोग, अपने प्रयोगों का आकलन करना स्पष्ट करता है।

उपरोक्त को रेखांकित करने के लिए प्रख्यात चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस की निम्न पंक्तियाँ समीचीन हैं:

"जो मैं सुनता हूं, भूल जाता हूं। जो में देखता हूं, याद रखता हूं। जो मैं करता हूं, समझता हूं।"

अस्तु स्वयं प्रयोग करने के बाद वैज्ञानिक प्रणाली से उसका विश्लेषण करना ज्ञानोपार्जन के लिए नितान्त आवश्यक है। इसलिए विज्ञान केन्द्र की स्थापना एवं विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

अनुमान है कि आई०आई०टी० के सहयोग से विज्ञान केंद्र की स्थापना लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में हमारा पहला एवं सार्थक कदम होगा।

3.3 शिक्षकों का प्रशिक्षणः हमारी संस्था यह सुनिश्चित करती है कि विद्यालय के आस—पास के क्षेत्र के पढ़े लिखे अन्य युवा ही इन विद्यालयों में काम करें। अधिकाश चयनित शिक्षक हमारे द्वारा प्रदत्त वेतन में सुयोग्य होते हैं। परन्तु पाठन विधि में अन्ट्रेन्ड होते हैं। अतः यह नितान्त आवश्यक समझा गया कि समय—समय पर इन्हें भी प्रशिक्षित कराया जाये। प्रशिक्षण में परिवर्तनशील पाठ्यक्रम एवं उसके कठिन बिन्दुओं को प्रशिक्षित प्रशिक्षकों के द्वारा समझाया जाना जरूरी है क्योंकि हमारे इन विद्यालयों में काम करने एवं प्रशिक्षण ग्रहण करने के बाद इनकी उन्नित का मार्ग खुल जाता है एवं बहुधा ये हमारी संस्था को छोड़कर अन्यत्र उच्च वेतनमानों पर चले जाते हैं अतः विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के अतिरिक्त गांव के आस—पास के अन्य युवाओं को भी उपरोक्त प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षित किये जाने का प्रावधान है।

3.4 सिद्ध जागरण सेवा की गतिविधियों का विस्तृत वर्णन निम्नवत है-

सिद्ध जागरण सेवा समिति को स्थानीय जनमानस में शिक्षा, स्वास्थ्य (विशेष रूप से बच्चों के) आचरण एवं रूझान, अधिकार एवं कर्तव्य, वयस्क व्यवहार एवं दायित्वों के प्रति चैतन्य बनाने एवं रूचि जागृत करने हेतु स्थापित किया गया ताकि सामाजिक न्याय, एवं ग्राम स्तर पर सूक्ष्म नियोजन द्वारा सर्वांगीण विकास संभव हो सके। इसके अन्तर्गत—

i) बाल प्रभागः इसमें 6 से 16 वर्श तक के बच्चों का प्रावधान है। बच्चों के जन्म का पंजीकरण, जन्म
(9)

प्रमाण—पत्र, महिला भ्रूण हत्याओं पर रोक, टीकाकरण, स्वास्थ्य की देखभाल एवं पोशाक आहार को उपलब्ध करवाना है। बाल सुरक्षा घर—परिवार के परिवेश में एवं विशेश रूप से बालिकाओं के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से सुरक्षा का प्रावधान। आत्मरक्षा, महिला स्वास्थ्य एवं स्वच्छता (बालकों के अतिरिक्त) पारिवारिक कलह, वाहन चालन, धूम्रपान, मद्यपान से उन्हें बचाने आदि के अलावा अन्य कुरीतियों से उन्हें दूर रखना सर्वोपरि है। सरकारी विद्यालयों में उपलब्ध उपकरण, खेल—कूद सामग्री के अलावा मनोरंजन के संसाधन जुटाना भी महत्वपूर्ण रूप से जोड़े गए हैं। सबसे बढ़कर बच्चों की भागीदारी अथवा साझेदारी की परिकल्पना की गई है।

ii) युवा प्रभागः सिद्ध जागरण सेवा सिमित की गतिविधियों में रूचि रखने वाले माता—पिता, अभिभावकों तथा अन्य क्षेत्रीय युवाओं के अलावा फाउंडेशन फॉर एक्सीलेंस की छात्रवृत्ति धारी युवकों द्वारा ग्राम विद्यालयों के विकास की निगरानी के अलावा अन्य गंभीर समस्याओं का अध्ययन एवं उनके निवारण के प्रयार परिकित्पत हैं। देखा गया है कि लोग स्थानीय स्तर पर बहुधा, डाक्टरों को एवं बुनियादी सुविधाओं तक को नहीं जुट पाते। अतः इन सब का प्रावधान रखा गया है। ऐसा समाज की भागीदारी के बिना संभव नहीं। मुख्य चिकित्सक एवं अन्य विशेशज्ञों को विद्यालय स्तर पर उपलब्ध करवाने का प्रयास भी सूची में बहुत ऊपर है। विद्यालयी आधार ढांचे को स्थानीय एवं अन्य दाताओं के सहयोग से सवंधित एवं पुष्ट करना भी इसमें सिमितित है। यह प्रभाग महिलाओं, अभिभावकों एवं समुदाय को विद्यालयों को अपना लेने और उनके संवर्धन हेतु सहायता देने हेतु कार्य करेगा। विद्यालय में देर से पहुँचने वाले, न आने वाले छात्र/अध्यापकों की निगरानी/कारण एवं निवारण भी महत्वपूर्ण बिंदु माने गए है। छात्रों के बैज की समस्या, उत्कृष्ठता की पहचान, उन्हें सम्मानित करना, साफ पोशाक पर बल, नियमित उपस्थिति, सुलेख, अच्छे अध्यापक, प्रत्येक विद्यालय हेतु सिद्ध जागरण सेवा फैडरेशन द्वारा अच्छे अध्यापकों का सम्मान, शिक्षक प्रशिक्षण आदि अन्य लक्ष्य होंगे। सरकारी विद्यालयों के उपकरणों एवं संसाधनों की निगरानी को भी महत्व दिया गया है।

iii) वयस्क नागरिकः (नाना—नानी/दादा—दादी) प्रभागः यह समाज की विषम समस्याओं का आंकलन करता है। साथ ही नागरिकों के आचरण एवं उनके सुझावों का अध्ययन भी इसका उद्देश्य है। समाज में चेतना एवं जागृति के माध्यम से सिद्ध जागरण सेवा समिति भ्रश्टाचार उन्मूलन के लिए भी कटिबद्ध है। सहभागिता, सहयोग एवं सहकारिता को मूलमंत्र मानकर इस दिशा में नई पहल की जा रही है।

3.5 रोजगारपरक प्रशिक्षण— प्रदेश में अनेक शिक्षित युवाओं को उचित रोजगार, आजकल की स्कूली शिक्षा के बावजूद नहीं मिल पाता, यदि बेरोजगार युवकों का रोजगारपरक प्रशिक्षण दिया जा सके तो उन्हें रोजगार मिलने में आसानी होगी और प्रशिक्षण के बाद वे स्वयं अपना रोजगार चलाने में सक्षम हो सकेंगे। इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए हमने सर्वप्रथम सिलाई, बुनाई, गुड़िया बनाने के अलावा खाद्य प्रसंस्करण एवं कम्प्यूटर नैटवर्किंग का प्रावधान भी इस वर्श हल्द्वानी में रखा है। उपरोक्त सभी पांच कार्यक्रम उत्तराखंड के अन्य दस—दस विद्यालयों के झुण्ड में चलाकर परखे जायेंगे तािक कालांतर में इन्हें समस्त प्रदेश के विद्यालयों में लागू किया जा सके।

हमें हर्ष है कि उत्तराखंड सरकार हमारे प्रथम आदर्श विद्यालयों की राह पर प्रदेश के 760 (670

6 confuling of 10)

न्याय पंचायत एवं 86 नगरीय क्षेत्रों के) वर्तमान विद्यालयों को आदर्श से बनाने का मन बना चुकी है। 4.0 समिति द्वारा लगाये गये नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर :

साविद्या उपसमिति की महत्वपूर्ण गतिविधियों के अतिरिक्त मुख्य कार्य समिति के अन्तर्गत कैटेरैक्ट ऑपरेशन का रहा है। पिछले 2 वर्श के अन्दर हमारी संस्था ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में 13 नेत्र शिविर लगाकर 591 ऑख के कैटरैक्ट ऑपरेशन कराये हैं। लगाये गये कैम्पों में डॉ० जी.बी. बिष्ट, डॉ० डी.एन. पोडियाल का नाम सहायतार्थ उल्लेखनीय है। लगाये गये कैम्पों का स्थान और ऑखें सुधारे हुये मरीजों की संख्या टेबल के रूप में संरक्षित की गयी है।

## 🔿 हिमवत्स समिति द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में नेत्र शिविर एवं शल्य चिकित्सा

-	संख्या स्थान		दिनांक	मरीज	(ऑख सुधारे)	(ऑख सुधारे)	
	1. 2. 3. 4. 5.	चम्पावत २००६ः हल्द्वानी लोहाघान्ट गरमपानी बेरीनाग	मार्च 1—4 अप्रैल, 12—14 अप्रैल, 19—24 जून 16—18 नवम्बर 2—5	91 20 84 07 60	3 80	2007 2008	
2007	6. 7.	डीडीहाट धारचूला	नवम्बर, 24–26 नवम्बर, 27–29	69 	-380		
	9. 10. 11.	बेरीनाग डीडीहाट गरमपानी	जून, 6—7 जून, 8—9 सितम्बर 6—8	75 41 05			
	12. 13.	ओखलकॉडा कोटाबाग	दिसम्बर, 13—15 दिसम्बर, 20—23	28 21	170		
	-	कैटेरैक्ट ऑपरेशन् ोमती गिरिवाला पन्त	28.02.08 र प्रोत्साहन पुरस्कार		550 91 41	·6	

शिक्षा सत्र 2007—2008 के प्रारम्भ में हिमबत्स की साविद्या उपसमिति को श्री रमेशचन्द्र पन्त अवकाश प्राप्त कुल सचिव कुमाऊ विश्वविद्यालय द्वारा अपनी पत्नी स्वर्गीया गिरिवाला पन्त, भूतपूर्व प्राचार्या, वनस्पित विज्ञान कु0वि0िव नैनीताल की स्मृति में 16 प्रोत्साहन छात्र वृतियां प्रत्येक 1000 रु. वार्षिक का प्रस्ताव प्राप्त हुआ। यह प्रोत्साहन छात्रवृति वर्ष 2006.07 में आठवी कक्षा उत्तीर्ण तथा वर्तमान समय में नवीं कक्षा में पढ़ने वाले उन छात्र छात्राओं को वितरित की गई। जिन्होंने आठवीं कक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त किये तथा जिन्हें किसी अन्य स्त्रोत से कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हो रही थी। हल्द्वानी नगर शिक्षा अधिकारी एव जिला शिक्षा अधिकारी नैनीताल के सहयोग से ऐसे विद्यार्थियों का चयन कर दि0 24.08.07 का राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कुसुमखेड़ा हल्द्वानी में छात्रवृति का वितरण हुआ। छात्रवृति वितरण में सहयोग के लिए हिमवत्स रा०उ०मा०वि० कुसमखेड़ा

के प्रार्चाय एवं स्टाफ को धन्यवाद प्रेषित करती है।

#### 6.0 निर्धन छात्रों को कपड़ों का वितरण

हि0वा0स0 तथा वि0 एवं प0स0 की साविधा उपसमिति प्रतिवर्ष अक्टूबर/नवम्बर माह में हल्द्वानी शहर एवं आस—पास के ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब छात्र/छात्राओं को समिति के पास उपलब्ध धन राशि से गरम कपड़ा मुख्य रुप से स्वेटर वितरित करती रही है। 2005 में इस संस्था द्वारा आठ प्राइमरी विद्यालयों के 45 छात्र, 2006 में 10 विद्यालयों के 61 तथा 2007 में 12 विद्यालयों के 69 छात्र/छात्राओं को गरम स्वेटर देकर छात्रों को प्रोत्साहित किया है।

#### महात्मा गांधी जी के सात अपवाद:

- . बिना नैतिक आचरण के व्यापार (करना)
- 2. बिना चारित्रिक उत्थान के ज्ञानार्जन
- 3. ' चेतना विहीन आनन्द
- 4. सिद्धांत विहीन राजनीति

### मानवीय आचार विहीन विज्ञान प्रगति

- 6. कार्य के बिना धनार्जन
- . 🕒 त्याग के बिना पूजा

### समिति के दानदाता (1997 से 2008 तक )

1. आशा फौर एजूकेशन(सिलिकौन वैली)

- 2. डा० एच०डी० बिष्ट
- 3. श्रीमती निर्मला बिष्ट
- 4. श्रीमती आशा बिष्ट
- 5. डा० जी०बी०बिष्ट
- डा० जा०बा०ाबष्ट
   डा० पी०बी०बिष्ट
- 7. श्री एच0आर0सूद
- 8. श्री आर०के० पन्त
- 9. श्री जी०बी०रश्यारा
- 10. श्रीमती माया त्रिपाढ़ी
- 11. श्रीमती कमला त्रिपाठी
- 12. श्री आर०के०पन्त

- 13. आर०सी० पन्त
- 14. डा० मीना भटट
- 15. डा० ए०सी० जैन
- 16. डा० ए०बी० मेवार
- 17. नैनीताल बैंक चम्पावत
- 18. डा० आर०के० बिष्ट
- 19. डा० चित्रांका डालाकोटी
- 20. डा० पी०सी० गुरुरानी
- 21. श्री आर०डी० जोशी
- 22. डी० बी०सी० एस
- 23. लिंगवा इन्डिया कामर्शियल
- 24. श्री जेoएसo तिवारी

### समिति के सहयोगी चिकित्सक सदस्य

डा० जी०बी० बिष्ट
 डा० डी०एन० पौडियाल

वरिष्ठ नेत्र शल्यक वरिष्ठ नेत्र शल्यक 5. डा० पी०सी०गुक्तरानी व.फि.रेडियोलॉजिस्ट 6. डा० एस०एस० भारद्वाज व. पैथालॉजिस्ट

3. डा० ए०बी० मवार

वरिष्ठ फीजिशियन वरिष्ठ फीजिशियन 7. डा० मीना भट्ट व. स्त्री / प्रसृति रोग विशेषज्ञ

4. डा० एम०सी० तिवारी

Dorus 24, 174/my Doctors

## शिक्षकों के लिए आचार संहिता

1. साविद्या द्वारा नियुक्त पूर्ण कालिक शिक्षक प्रति सप्ताह 33 घण्टा कार्य करेंगे। इसी प्रकार अंश कालिक शिक्षक को 17 घण्टा प्रति सप्ताह कार्य करना होगा।

2. प्रत्येक माह की 24 तारीख को प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यालय के प्रधनाध्यापक एवं व्यवस्थापक से

अपनी उपस्थिति प्रमाणित कराकर सचिव को सुलभ करायेगा।

3. समय सारिणी के अनुसार प्रत्येक शिक्षक को कक्षा में शिक्षण कार्य करना होगा। किसी भी वादन में कोई भी कक्षा खाली नहीं रहेगी, क्योंकि शिक्षकों की संख्या कक्षाओं के अनुसार कही कम नहीं है।

4. शिक्षण अवधि में शिक्षकों से कोई अन्य कार्य नहीं लिया जायेगा। व्यक्तिगत कार्य विद्यालय समय

में नहीं सम्पन्न होंगे।

5. शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि कक्षा में शिक्षण कार्य करते समय आपस में अथवा अभिभावकों से बातचीत नहीं करेंगे।

6. शिक्षक सुविधानुसार मासिक परीक्षायें लेंगे तथा अपनी डायरी में छात्रों के प्राप्तांक अंकित करेंगे।

 प्रत्येक मासिक परीक्षा के बाद कमजोर छात्रों का चयन कर उनके लिए सायंकालीन कक्षाओं की व्यवस्था हेतु नाम दिये जाय। छात्रों को उनकी उत्तर पुस्तिकाएं देखने के लिए वापस कर दी जायं।

अभिभावकों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाय कि बच्चे कक्षाओं में नियमित उपस्थित रहें।

9. अपने शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने वरिष्ठ शिक्षकों के अनुभवों का लाभ उठावें। उन्हें किसी भी स्रोत से मदद लेने में संकोच नहीं करना चाहिए।

10. शिक्षक विद्यालय में सुलभ पुस्तकालय का समुचित उपभोग करें।

 पाठ्य पुस्तकें पढ़ने मात्रा से समुचित मानसिक विकास संभव नहीं है। इसलिए छात्रों में पुस्तकालय के उपयोग की आदत विकसित की जाय।

12. छात्रों का समुचित विकास पूर्ण स्वस्थ्य रहने पर संभव है। इसलिये उनके शारीरिक विकास के लिए कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त खेलकूदों की उचित व्यवस्था की जाय। टाइम—टेबल में भी अनिवार्य रूप से खेल—कृद/व्यायाम की घण्टी होनी चाहिए।

13. यह कम्प्यूटर क्रान्ति का युग है। इसलिए छात्रों में कम्प्यूटर के प्रति रुचि जागृत की जानी चाहिए

तथा प्रत्येक कक्षा में इसके लिए तीन वादन निर्धारित किये जाने चाहिए।

14. पाक्षिक रूप से बाल सभा आयोजित की जाय, छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य के लिए प्रोत्साहित किया जाय। कला, संगीत, सुलेख आदि कार्यों के लिए छात्रों। को प्रोत्साहित किया जाय।

15. पठन—पाठन तथा पाठयेत्तर क्रिया कलापों के मूल्यांकन के लिए कुछ दिन निर्धारित कर लिये

जायें

छात्रों के विकास के लिए शिक्षकों की सहायता स्वागत योग्य होंगी।

साविद्या उप समिति

(13)

## सर सी.वी.रमन का जीवन वृत्त – एक झलक

अलौकिक प्रतिभा के धनी, महान वैज्ञानिक सर चन्द्रशेखर वैंकट (सी.वी) रमन का जन्म 7 नवम्बर 1888 को त्रिचनापल्ली में हुआ था। उन्हें बचपन से ही एक अच्छा शैक्षिक माहौल विरासत में मिला था।

प्रैजीडैन्सी कालेज मद्रास से 1904 में प्रथम स्थान एवं भौतिकी में स्वर्ण पदक पाकर बी.ए की परीक्षा तथा 1907 में एम.ए की उपाधि प्राप्त की। उनके मौलिक शोधपत्र अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में ग्यारहवीं और बारहवीं की कक्षा से ही प्रकाशित होने लगे थे। तत्कालीन परिस्थितियों में विज्ञान में कैरियर की बेहतर संभावनाएं न देखते हुए प्रखर प्रतिभासम्पन्न सी0वी0रमन भारतीय वित्त सेवा की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर असिस्टेण्ट एकाउण्टेण्ट जनरल हो गये। ब्रिटिश साम्राज्य में नागपुर से लेकर रंगून तक का क्षेत्र उनके जिम्मे था। इतने बड़े दायित्व का निर्वहन करते हुए उन्होंने अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा को ठहराव नहीं दिया तथा उच्च स्तरीय शोध कार्य के लिए असाधारण रूप से समय निकालते रहे।

कलकत्ता, सी.वी.रमन का मुख्यालय था। इसी बीच डाँ० महेन्द्र लाल सरकार ने कलकत्ता में इण्डियन एसोशियेशन फाँर दि किल्टिवेशन ऑफ साइंस की स्थापना की। बाद में सर रमन इस संस्थान के मानद सचिव भी रहे। इण्डियन एसोशियेशन फाँर दि किल्टिवेशन ऑफ साइंस की प्रयोगशाला में सी. वी.रमन प्रातः 5:30 से 9:30 एवं सांय 5:30 से 9:30 अर्थात आठ घण्टा प्रतिदिन साधना करते थे। उन्हें भारतीय संगीत में गहरी रूचि थी। विज्ञान की नयी खोज और उपलब्धि को समर्पित, 16 घण्टे से भी अधिक प्रतिदिन काम करने वाला यह महान कर्मयोगी मृदंग और तबले की थाप, हारमोनियम, तानपुरा और वाइलन के स्वर तथा वीणा की झनकार के मध्य संगीत की साधना के साथ अनवरत वैज्ञानिक तथ्यों का परीक्षण और नूतन खोज करता रहा।

इण्डियन एसोशियेशन फॉर दि कल्टिवेशन ऑफ साइंस में 11 वर्श की अनवरत साधना एवं महत्वपूर्ण वैज्ञानिक शोधों के फलस्वरूप सन् 1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपित सर आशुतोश मुकर्जी ने श्री रमन को विश्वविद्यालय के साइन्स कॉलेज में स्थापित 'सर तारकनाथ पालित पीठ' का चेयरमैन नियुक्त किया। वहाँ पर 11 वर्ष तक 28 फरवरी 1928 को एक नये प्रकाश की महत्वपूर्ण खोज के परिणामस्वरूप उन्हें 1930 में भौतिकी का नोबेल प्राइज मिला।

1926 से उन्होंने इण्डियन जरनल ऑफ फिजिक्स का प्रकाशन/सम्पादन एवं उसके बाद इण्डियन अकादमी ऑफ साइंस की स्थापना/अध्यक्षता की।

सर सी.वी.रमन 1933 से 1948 तक इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स बंगलीर में प्रोफेसर रहे। 1948 से जीवन के अन्तिम समय तक अपने धन से बनाये हुए रमन रिसर्च संस्थान के निदेशक पद पर बने रहे।

अपने जीवन काल में उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सम्मान मिले, अनेक विश्वविद्यालयों ने उन्हें डाक्टरेट की मानद उपाधियां प्रदान की तथा कई अकादमिक सोसाइटीज की सदस्यता प्रदान की गयी। 1929 में वे नाइटहुड से सम्मानित हुए तथा 1954 में उन्हें भारत रत्न से विभूषित किया गया। विज्ञान का यह महान पुजारी 21 नवम्बर 1970 को इस संसार से विदा हो गया। इस युग पुरूष को हमारा शत—शत प्रणाम।

#### सर सी.वी.रमन के जीवन में 11 अंक का संयोग

7 नवम्बर 1888 (ग्यारहवाँ माह) जन्म 11 दिसम्बर 1930 (ग्यारहवीं तिथि) नोबेल पुरस्कार वित्त विभाग की सेवा 1907-1917 (ग्यारह वर्ष) रमन प्रभाव पर कार्य 1917-1928(ग्यारह वर्ष की साधना) निदेशक रमन रिसर्च संस्थान 1948-1970(11 x 2 वर्ष) (1954 11x 6 वर्ष की आयू मे) भारत रत्न 21 नवम्बर 1970 (ग्यारहवॉ माह) मत्यु 2007-08(11x9 वर्ष में) नैशनल साइन्स डे (राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मरणोपरांत)

"Tutor, what a noble soul, for the training of a child one must be a father or more than a man."

"Plants are fashioned by cultivation, man by education."

Rousseau

## विश्व के नवीनतम सात आश्चर्य

- 1. ब्राजील की क्राइस्ट रीडिमर की प्रतिमा
- 2. पेरू की मेचू पिसू
- 3. मैक्सिको का चिचैन इत्जा पिरामिड
- 4. चीन की विशाल दीवार
- जोर्डन का पैट्रा
- 6. रोम में कोलोसियम
- भारत का ताजमहल

## <sup>></sup> गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

(07.05.1861-07.08.1941)

रवीन्द्र नाथ टैगोर— गुरुदेव का नाम विश्वभर में एक जाना माना नाम है। उन्होंने 8 वर्ष की आयु में पहली कविता लिखी थी। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद विंघमटन लंदन में 2 वर्ष अध्ययन किया। उनकी अधिकांश शिक्षा स्वप्रेरित और स्वअर्जित रही। वे देवेन्द्रनाथ एवं शारदा देवी के 14 बच्चों में से 13वें बच्चे थे। 11 वर्ष में उपनयन संस्कार के बाद वे शान्तिनिकेतन, अमृतसर होते हुए हिमालयी क्षेत्र के डलहौजी क्षेत्र में अपने पिता के साथ भ्रमण में गये। वहाँ उन्होंने महत—पुरुषों की जीवनी, इतिहास, खगोलशास्त्र आधुनिक विज्ञान, संस्कृत भाषा और प्राचीन काव्य का अध्ययन किया।

उन्होंने मृणालिनी देवी से 1883 में विवाह रचाया, उनके पाँच बच्चे हुए। कुछ समय बंगाल सिलैहदाह स्टेट में जमींदार बाबू के रूप में समय व्यतीत कर वे शान्तिनिकेतन के सुन्दर वातावरण में चले गये। उनकी प्रमुख रचनायें 1901 से 1932 के बीच प्रकाशित हुई। 1913 में गीतांजिल के प्रकाशन में साहित्य में उन्हें नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1915 में तत्कालीन ब्रिटिश शासन ने उन्हें नाइट की उपाधि से सम्मानित किया।

टैगोर अपने साहित्यक, नाट्य, कला और संगीत के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिये जाने जाते हैं। उनकी प्रसिद्ध काव्य कृति 'गीतांजली' रहस्यात्मक भिक्त काव्य की बेजोड़ कृति है। इसी कृति के स्वयं के द्वारा किये गये अनुवाद पर उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस रचना से न केवल उन्हें विश्व में पहचान मिली वरन् भारत और भारतीय संस्कृति को भी अपार प्रतिष्ठा मिली। साहित्य में इसके अतिरिक्त टैगोर ने अनेक कथा विधाओं में कार्य किया ओर देश की समसामयिक परिस्थितियों पर अपने ढंग से विचार किया। उपन्यासों 'गोरा' आदि उपन्यासों में रंगभेद, वर्ण भेद, वर्ग भेद की समस्या को विशिष्ट ढंग से उठाया गया है। संगीत और कला के क्षेत्र में उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली की छाप छोडी।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रकृति के साहचर्य में मुक्त शिक्षा पाने की विशिष्ट पद्धित का शान्तिनिकेतन की स्थापना द्वारा उन्होंने एक मौलिक कार्य किया। टैगोर की सम्पूर्ण जीवन पद्धित ही कलामय रही। राष्ट्र ने उनकी एक कविता को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार कर उनके महत् योगदान को प्रतीकात्मक रूप से स्वीकार किया है।

टैगोर के अन्तिम 4 वर्ष लम्बी बीमारी व लगातार दर्द में व्यतीत हुए। इस दौरान उन्होंने जो कविताएं लिखी वे उनकी उत्कृष्ट कविताओं के रूप में जानी जाती है। 7 अगस्त 1941 को उनका देहावसान हुआ।

## ्रें **मदर टैरैसा** (अगस्त 27, 1910 – सितम्बर 5, 1997)

रोमन कैथोलिक सिस्टर आयरिश "सिस्टर ऑफ लौरयटो' की थी, जिनका मिशन भारत में था। सन् 1931 से 1948 तक उन्होंने सैन्ट मैरी हाईस्कूल कलकत्ता में पढ़ाया। पश्चात् गरीबों और असहायों को खुली हवा की जगह पढ़ाना शुरू किया, जहां लोगों से मदद मिलती रही। अक्टूबर 7, 1950 में रोम और पोप से आज्ञा लेकर "मिशन ऑफ चैरिटीज", असहायों की सहायता और प्यार के लिए बनाया। 1965 में यह संस्था "इन्टरनेशनल रिलीजियस फेमिली" बन गई। इनकी मृत्यु के समय इस संस्था में 10 लाख से अधिक व्यक्ति 123 देशों में, 610 स्थानों में कार्यरत थे। इन लोगों के कार्य में मदर टैरैसा की आत्मा ओर स्वभाव असहायों की सहायता में प्रकट होता था।

मदर टैरैसा को 1971 में पोप जॉन (XXII) का पीस प्राइज, 1972 में नेहरू प्राइज फौर प्रमोशन आफ इन्टरनेशनल पीस ऐन्ड अन्डरस्टैन्डिंग, 1979 में वाल्जन प्राइज, टैम्पलटन ओर मैगसेसे अवार्ड और नोबल पीस प्राइज मिला। उनसे हमें संस्कृति, जाति, धर्म और समुदाय के भेदभाव को दूर रखकर समाज उत्थान का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है।

भैरी क्यूरी 5 (m2 s) - family . (1867—1934)

इनका जन्म वार्सी पौलैण्ड में हुआ था। इनका बचपन का नाम कु0 मैरी स्कलोडोवस्का था। ये पेरीक्यूर के साथ विवाह करने के बाद फ्रॉस की नागरिक बन गयी तथा इनका कार्य स्थल सोरवोर्न विश्वविद्यालय पेरिस था। इनको रेडियनम एवं पोलोनियम की खोज एवं इस अद्भुत एलिमैन्ट के पृथकीकरण तथा उसके कम्पाउण्ड की प्रकृति के अध्ययन के लिए व रसायन विज्ञान की प्रगति के लिए सन् 1911 में नोबल पुरस्कार मिला।

इनके जीवन से सम्बन्धित अद्भुत तथ्य निम्न हैं-

1. इनको दूसरा नोबेल पुरस्कार रेडियो एक्टिविटी विज्ञान में मिला।

 इनके पति श्री पैरी क्यूरी को भी नोबेल पुरस्कार भौतिक विज्ञान में मिला। इनकी पुत्री ईटीन जौलिओर क्यूरी भी नोबेल पुरस्कार प्राप्त महिला थी। इनके दामाद फ्रैंडिरिक् जोलियट क्यूरी ने भी नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया था। इनके दूसरे दामाद (ऐमिक्यूरी के पति) हैनरी लैय्यईश भी नोबेल शान्ति पुरस्कार पाने वाली संस्था यूनिसेफ के निदेशक थे। स्मरण रहे कि मैरी क्यूरी नोबेल पुरस्कार पाने वाली अग्रिणी महिला रही हैं।

## रसुब्रमन्यन चन्द्रशेखर (1910–1995)

इनका जन्म दिनांक 19.10.1910 को लाहौर में हुआ था। इनके पिता का नाम चन्द्रशेखर सुब्रमन्यन अययर व माता का नाम सीता (कु0 बालाकृष्णन) था। चन्द्रशेखर 10 भाई—बिहनों में पहले पुत्र व तीसरी सन्तान थे। उनके 12 वर्ष तक की प्रारम्भिक शिक्षण घर में माँ एवं बाप तथा प्राइवेट ट्यूशन द्वारा हुई। 1922 से 1925 तक हिन्दू हाईस्कूल ट्रिपलीकेन्द्र व 1925 से 30 तक की शिक्षा रैजिडैन्सी कॉलेज मद्रास में हुई।

1930 में बी०एससी० पास करने के बाद सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त कर कैम्ब्रिज में शोध कार्य हेतु प्रवेश ित्रा। 1933 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी०एचडी० की उपाधि प्राप्त की। ट्रिनिटी कालेज 1933 — 37 में फेलोशिप के समय कई लोगों से मित्रता हुई 11936 में शिकागो विश्वविद्यालय में रिसर्च एसोसियेट के पद में लिलथा दोरियास्वामी से शादी करने के बाद गये। शिकागों में प्रारम्भिक वर्ष मनपसन्द शोध क्षेत्र के चयन करने में व्यतीत हुए। उन्होंने जीवन में 7 अलग—अलग क्षेत्रों में कार्य किया। इन सभी क्षेत्रों के कार्य करने के पश्चात निम्न दो पुस्तकें प्रकाशित की गयी।

- 1. एन इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ स्टैलर स्ट्रक्चर (1939)
- 2. प्रिन्सिपल्स ऑफ स्टैलर डायनामिक्स (1943) चन्द्रशेखर को 1983 में फिजिक्स में नोबल पुरस्कार मिला।

## हरगोबिन्द खुराना (जनवरी 9, 1922)

इनका जन्म रायपुर (पाकिस्तान) में हुआ। वे 5 भाई—बहिनों में उम्र में सबसे छोटे थे। उन्होंने हाईस्कूल मुल्तान (प०पंजाब, पाकिस्तान) से किया और एम०एससी० पंजाब यूनिवर्सिटी लाहौर (पाकिस्तान) से की। 1945 में भारत सरकार के द्वारा दी गई छात्रवृत्ति से वह लिवरपूल (इंग्लैण्ड) से पी०एचडी० करने गये, पश्चात 1948—49 में जूरिक में और काम फिजियौलौजी में करने गये। वहां प्रौफेसर प्रीलौग से विज्ञान, कार्य और परिश्रम करना सीखा। कुछ समय भारत सरकार में 1949 में ही प्रौफेसर क्यनर व प्रौफेसर टौड के साथ 1952 तक प्रोटीन और न्यूक्लियड ऐसिड में काम किया। 1952 में ही इनकी शादी हुई और इनके 3 सन्तानें हैं। 1952 से ब्रिटिश कोलिम्बया (कनाडा) में कार्य करने के पश्चात 1960 में विस्कौन्सिन और 1970 से बायलौजी और कैमिस्ट्री के पद पर एम०आई०टी० में है। 1968 में इन्हें फिजियौलौजी में नोबल पुरस्कार मिला।

(नवम्बर 3, 1933)

इनका जन्म पश्चिमी बंगाल के शान्ति निकेतन में हुआ 1941 में सैन्ट जार्ज स्कूल से हाईस्कूल पास किया। इन्होंने बी०ए० प्रथम श्रेणी में ट्रिनिटी कालेज कैम्ब्रिज में 1956 तथा पी०एचडी० 1959 में प्राप्त की। इन्होंने 1960 से 1961 तक एम०आई०टी० में विजिटिंग प्रौफेसर के पद में कार्य किया। इन्होंने कलकत्ता, जाधवपुर, दिल्ली, आक्सफोर्ड आदि विश्वविद्यालयों में अर्थशात्र के प्रोफेसर के पद में कार्य किया।

इन्होंने ऑलसोल्स कालेज में पॉलिटिकल इकोनोमी में तथा लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, हार्वर्ड विश्वविद्यालय में 1998 से 2004 तक प्रौफेसर के रूप में कार्य किया। मई 2007 में इन्हें नालन्दा मैन्टौरग्रुप के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। इन्होंने बिहार स्थित नालन्दा विश्वविद्यालय के प्राचीनतम शिक्षा पद्धित को आधुनिकतम अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विकसित करने का कार्य किया।

1981 में इन्होंने पोइन्ट्री एवं फैमीन नामक पुस्तक प्रकाशित की। इनको 1998 में अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार मिला। 1999 में भारत रत्न और बंग्लादेश की नागरिकता मिली। 2002 में ल्योनीफ और आगजिन हावर पुरस्कार व अंतराष्ट्रीय हयूमिन पर पुरस्कार मिले। 2003 में लाईफ टाईम एचीवमैन्ट एवार्ड मिला। भारत की अर्थ व्यवस्था में सेन का विशेष योगदान रहा है।



डुंगरासेठी माध्यमिक विद्यालय में चारों सदनों के बच्चे



कलेठी स्कल में अभिभावकों की सचिव से भेंट

## ेडॉ. देवी दत्त पन्त : एक व्यक्तित्व

ओम प्रकाश गंगोला

डॉ. देवी दत्त पन्त का नाम लेते ही एक विशिष्ट व्यक्तित्व साममे आता है। वे जहाँ भौतिकी के जाने—माने विद्वान पण्डित रहे वहीं वे मानव शास्त्रों की गहरी समझ रखने वाले मानवता से परिपूर्ण समाजबोधी व्यक्ति भी रहे हैं। गणित के शुद्ध संजटिल तर्कों से निर्मित भौतिकी की अवधारणा के साथ वे शुद्ध सम्वेदना प्रेरित भावनात्मक अभिव्यक्तियों के क्षेत्र कला और काव्य की भी समझ रखने वाले दुर्लभ व्यक्तित्व हैं। अपने विशेषीकृत क्षेत्र भौतिकी में उन्होंने सफलता के मानदण्ड स्थापित किये। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में एम.एस.सी. भौतिकी की उपाधि प्राप्त करने के साथ वे इसी ख्यातिलब्ध विश्वविद्यालय से 1949 में डी.एस.सी. की उपाधि से विभूषित हुए। 1942—44 तक वे भारत के महान् नोबेले पुरस्कार प्राप्त प्रो. सी.बी. रमन के निर्देशन में कार्य करते रहे। प्रो. रमन की इच्छा थी कि उनकी जैसी वैज्ञानिक प्रतिभा के व्यक्ति को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित विश्वख्याति के वैज्ञानिकों के साथ कार्य कर विज्ञान जगत में प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। उन्होंने 1960 में हेर्जबर्ग नोबेले पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक के साथ कार्य भी किया। अनेक मान—सम्मान प्राप्त किये, किन्तु व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से वे संतुष्ट होने वाले नहीं थे।

समाज चेता भाव ने उन्हें प्रतिष्ठित वैज्ञानिक की राह से अध्यापन की ओर मोड़ दिया। सामाजिक दृष्टि वाले वैज्ञानिक से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि अध्यापक अपने जाने हुए को आने वाली पीढ़ी के लिये सम्प्रेक्ष्य बनाता है और इस प्रकार अनेक वैज्ञानिक प्रतिभाओं के लिये द्वार खोलता है। आगरा स्थित अन्यान्य महाविद्यालयों के अतिरिक्त उन्होंने अपने समय की आदर्श शैक्षिक संस्था ठा. देव सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय, नैनीताल में प्राध्यापक भौतिक, प्राचार्य तथा कुमाऊँ विश्वविद्यालय में रूपान्तिरत इसके प्रथम कुलपित के रूप में निर्माण और विकास में प्रभूत कार्य किया। उनका यह कार्य ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय है। महामना मदन मोहन मालवीय की तरह प्रारम्भ में उन्होंने अच्छे प्राध्यापकों को प्राप्त करने के लिये व्यक्तिगत प्रयत्न किये।

विशुद्ध वैज्ञानिक ज्ञान और सामाजिक उत्थान की गहरी भावना उनमें प्रारम्भ से ही रही। वे विद्यार्थी जीवन में गाँधी जी से मिले थे और स्वतंत्रता आन्दोलन में समर्पित होने की इच्छा व्यक्त की थी लेकिन गाँधी जी ने उन्हें अपने क्षेत्र में रहकर ही कार्य करने की राय दी। वे गाँधी विचारधारा के अनुयायी रहे हैं। उन्हें गाँधी भक्त कहा जा सकता है। एक बार उन्होंने कहा था कि जब सामाजिक विदूपताओं से अत्यधिक विदीर्ण हो जाता हूँ तो गाँधी जी के चित्र के समक्ष बैठकर चिन्तन करता हूँ और एक अपूर्व शान्ति का अनुभव करता हूँ। अध्यापकों और पर्वतीय जनों को प्रतिष्ठा दिलाने की उनकी जीवनपर्यन्त चेष्टा रही। प्रशासनिक और अन्ततः राजनीतिक प्रतिनिधित्व की बात उन्होंने समय आने पर इसी लिये स्वीकार की। कभी उन्हें लगा शायद प्रशासनिक पदाधिकार से आदर्श शैक्षिक वातावरण बनाया जा सकता है। कभी उन्हें सारी प्रगति राजनीतिक सत्ता पाने में दिखाई दी, पर इन दोनों ही क्षेत्रों ने उन्हें अन्ततः निराश किया। पूर्णतः वैज्ञानिक होने की प्रतिष्ठादायी राह के स्थान पर प्राध्यापक बनने की राह पर निकल जाने के निर्णय को वे आज भी सही मानते हैं। उन्हें अपनी निष्ठा और अनुरूप प्रयत्न भाव के लिये याद किया जाता रहेगा।

शीला पन्त (वरिष्ठ) राष्ट्रीय महिला पत्रकार

भारतीय मानसिकता सरकारी क्षेत्र के विद्यालयों को वह तरजीह नहीं देती जो निजी क्षेत्र के महंगे विद्यालयों को देती है। अपने आप में यह एक बहुत बड़ी त्रासदी है कि भारत के सरकारी क्षेत्र के विद्यालयों के अध्यापक तक स्वयं अपने बच्चों को शिक्षा के लिए निजी क्षेत्र के विद्यालयों में भेजना बेहतर समझते हैं।

इससे एक ओर जहाँ सरकारी क्षेत्र के विद्यालयों के छात्रों में महंगे विद्यालय के छात्रों की तुलना में अपने भीतर अपने ही लिए एक हीनता का बोध मिलता है वहीं दूसरी ओर सरकारी विद्यालयों में साधनों का अभाव और छात्रों की निरन्तर घटती जा रही संख्या एक विकराल समस्या का रूप लेती जा रही है। एक और बात जो बेहद आश्चर्यजनक है वह यह कि सरकारी विद्यालय सुचारू रूप से एक सत्र में न केवल बहुत कम दिन तक खुले रह पाते हैं बल्कि कार्यदिनों में भी अध्यापक / अध्यापिकाओं को शैक्षिकोत्तर कार्यों में यथा जनगणना, निर्वाचक सूचियों के निर्माण आदि में लगा दिया जाता है जिससे शिक्षा, प्रशिक्षा एवं प्रशिक्षण का भट्टा ही बैठ जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए साविद्या ने एक नई पहल के रूप में सरकारी प्राथमिक पाठशाला, कुलेठी, चम्पावत, को अंगीकृत कर अपने संसाधनों के योगदान से हल कर आदर्श विद्यालय में परिवर्तित कर दिया है।

समय—समय पर कुलेठी विद्यालय के छात्र एवं सरकारी अध्यापकों को संस्था द्वारा सुलभ करवाए गए तीन विशेषज्ञ अध्यापकों की सहायता एवं प्रोत्साहनों के माध्यम से उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने एवं उन्हें राष्ट्र की प्राथमिक शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने में सराहनीय योगदान मिला है। सरकारी प्राथमिक विद्यालय कुलेठी को एक आदर्श विद्यालय के रूप में बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि बालिकाओं को देश में लिंग के आधार पर जिस भेदभाव का शिकार आजादी के बाद भी जो निरन्तर बनना पड़ा है उससे उन्हें मुक्ति दिलवाने के ठोस प्रयास किए जाएं।

उत्तराखंड की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित होने के कारण चम्पावत का विशेष महत्व है और उत्तराखंड के अपने इतिहास में भी इसकी स्थिति अतुलनीय है अतः यह लक्षित है कि बगैर कोई भी भेदभाव बरते उन्हें देश का आदर्श नागरिक बनने की पूरी—पूरी सुविधा विद्यालय स्तर से ही दिलवाई जा सके।

सामाजिक रुढ़ियों, कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों से हटकर विद्यालय के छात्रों को एक सार्थक, रोजगारपरक बुनियादी शिक्षा देने में सक्षम होने के लिए भी संस्था भरसक योगदान कर रही है।

28 फरवरी 2008 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के अवसर पर प्रख्यात आई. आई टी. कानपुर, के वैज्ञानिक अपनी उपस्थिति में छात्र—छात्राओं के समक्ष 100 अलग—अलग प्रयोग कर छात्रों को विज्ञान की आधुनिकतम उपलब्धियों से उन्हें परिचित करवायेंगे।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि एक स्वस्थ मस्तिष्क एक स्वस्थ शरीर में ही रह सकता है।

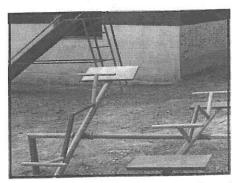
संस्था द्वारा उपलब्ध करवाए गए शिक्षक, अपने सहयोगी सरकारी अध्यापकों एवं विद्यालय के छात्र / छात्राओं को स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं उनके सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक बनाने में प्रयासरत है।

यह परिकल्पना भी की गई है कि कालांतर में सरकारी प्राथमिक विद्यालय, चम्पावत न केवल उत्तराखंड के बल्कि देश के किसी भी सरकारी प्राथमिक विद्यालय के लिए एक अनुकरणीय आदर्श विद्यालय के रूप में अपने आप को प्रस्तुत कर सकें।

शिक्षा, प्रशिक्षा, प्रशिक्षण एवं दीक्षा के अतिरिक्त खेल-कूद, व्यायाम के साथ ही संगीत एवं नृत्य को भी एक प्रशिक्षण उपादान के रूप में विद्यालय स्तर पर लागू करने की वृहत्तर योजना है। कोरे सरकारी नारों एवं वादों से हट कर सार्थक, प्रासंगिक व्यावहारिकताओं को आजमाने की आवश्यकता को स्वीकार कर लिया गया है।

अब अगर यह मान भी लिया जाय कि बावजूद इसके कि दृढ़तम संकल्प भी साधनों के अभाव में एक बहुत बड़ी बाधा बन जाते हैं, यह मानना होगा कि संस्था अपने आदर्श विद्यालय, कुलेठी सरकारी प्राथमिक विद्यालय, चम्पावत के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रही है।

इस सब के लिए स्थानीय जनों में भी जागरूकता एवं उत्तरदायित्व समझाने में संस्था खासी सफल रही है।



कुलेठी विद्यालय में छात्रों के खेलने के लिए सी-सॉ एवं अन्य उपकरण



कुलेठी प्राथमिक विद्यालय में उपलब्ध डेस्क/कुर्सियां

- बी.डी.गुरूरानी

प्राथिमक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो प्रतिबद्धता हमारे संविधान में व्यक्त की गयी थी कदाचित उसे समय पर पूरा नहीं किया जा संका। संविधान लागू होने के बाद 15—20 वर्षों में जो काम होना चाहिए था या जो कार्यनीति तय की जानी थी वह काम 50—60 वर्षों में भी पूरा हो नहीं सका। शिक्षा का प्रारूप नितान्त परम्परागत एवं निष्प्रभावी ही नहीं वरन् खोखला सा हो गया। सरकारी शिक्षा तंत्र से छात्रों एवं अभिभावकों का पलायन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है।

दूसरी ओर जैसे—तैसे लोगों में शैक्षिक चेतना जागृत हुई उन्होंने शिक्षा के सरकारी तंत्र से मुंह मोड़कर बेहतर विकल्प खोज लिये। प्रतिस्पर्धी शिक्षा तंत्र विकसित होने लगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी ऊँच—नीच, छोटे—बड़े और अमीर—गरीब की गहरी खाई पैदा हो गयी। एक जर्मन दार्शनिक IVAN ILLICH ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Celebration of Awareness की शुरूआत ही इस अलख के साथ की कि "We are challenged to break the social and economic systems which devide our society between overpriviledged and underprivileged". किन्तु हमारी दुहरी शिक्षा व्यवस्था ने इस विभेद को और भी गहरा कर दिया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मानवीय प्रतिभा और क्षमताओं में जन्मजात अन्तर होता है, रूचि भेद होना भी स्वाभाविक है। कौशल विकास एवं व्यक्तित्व विकास के आयाम भी अलग—अलग हैं। बच्चों की बुद्धिलब्धि के अन्तर को देखते हुए भी उनकी प्रतिभा के विकास के लिए बहुआयामी शिक्षा की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता। लोक कल्याणकारी राज्य में विभिन्न क्षमताओं के विकास के लिए रास्ता चुनने का सबका अपना मौलिक अधिकार भी है किन्तु सार्वजनिक शिक्षा पद्धित आम आदमी के लिए ऐसा विकल्प प्रदान करने में कदाचित असफल रही। फलतः हमारी शिक्षा व्यवस्था समय के परिवर्तन के साथ कदम मिलाने में पीछे रह गयी और उससे जनता का मोह भंग हो गया प्रतीत होता है तथा वह जनमानस में अपनी पैंठ नहीं बना पा रही है।

आज हमारे पास न तो प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी है न संसाधनों की। शिक्षकों का वेतन एवं उनकी सेवा शर्ते काफी अच्छी हैं। सर्व शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत विद्यालयों में शैक्षिक उपकरणों एवं शिक्षण सामग्री के लिए प्रशस्त धनराशि व्यय की जा रही है। मूल्यांकन, प्रवर्तन एवं प्रशिक्षण के लिए एक बहुत बड़ा Infrastructure भी खड़ा किया गया है। सम्पूर्ण प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क है। पाठ्यसामग्री निःशुल्क प्रदान की जाती है। समय—समय पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या समिति द्वारा अनुश्रवण भी हो रहा है। मध्याहार योजना लागू की गयी है। सुरुचिपूर्ण शिक्षण, शिक्षण—अधिगम सामग्री तथा नवाचार पद्धितयों का विकास आदि की नित नवीन चर्चाओं के बावजूद अभिभावक इस सारी व्यवस्था से कन्नी क्यों काटते हैं, क्यों शिक्षा का इतना विशाल तंत्र गरीबों अपविचतों के लिए ही सीमित रह गया है, क्या इसकी व्यापक स्तर पर समीक्षा नहीं की जानी चाहिए?

सन् अस्सी के दशक तक जब कि हम राष्ट्रीय साक्षरता के क्षेत्र में अत्यन्त पिछड़े थे और प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य से बहुत दूर थे, शिक्षा के प्रचार—प्रसार के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता की दरकार इसलिए नहीं की जाती थी कि इससे हमारी सभ्यता—संस्कृति पर कहीं प्रतिकूल प्रभाव न पड़े लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के बाद विशेष रूप से नब्बे के दशक के प्रारम्भ में 'सबके लिए शिक्षा (Education For All) परियोजना लागू होने पर तो हम लम्बे हाथ से विश्व बैंक की वित्तीय सहायता ले रहे हैं और तब से प्राथमिक शिक्षा के सुदृढ़ीकरण पर अकूत धनराशि व्यय की जाती रही है। तब क्यों हम अपने लक्ष्य के अनुरूप शिक्षा को गुणात्मक स्वरूप प्रदान नहीं कर सके तथा छात्रों और अभिभावकों की मनोवृत्ति को बदलने में नाकाम रहे और उन्हें शिक्षा की इस धारा की ओर उन्मुख नहीं कर सके।

शैक्षिक सुधारों के लिए शिक्षकों के वेतन व पदोन्नित तथा सेवा शर्तों में सुधार के कदमों की प्रशंसा की जानी चाहिए क्योंकि अच्छी शिक्षा, शिक्षकों की सम्मानजनक सामाजिक स्थिति पर ही निर्भर हैं किन्तु इसके लिए अच्छी कार्य संस्कृति भी विकसित की जानी चाहिए। इसके बिना शिक्षा का निहितार्थ कैसे प्राप्त होगा। सारा शिक्षा तंत्र कर्मचारियों और अधिकारियों का ऐशगाह तो नहीं हो सकता।

अपेक्षा तो यह की जाती है कि सरकारी शिक्षा व्यवस्था जिसके लिए इतना बड़ा प्रशासनिक तंत्र काम कर रहा है और जिस पर भारी बजट खर्च होता है अन्य शैक्षिक इकाइयों तथा निजी स्कूल चलाने वालों के लिए प्रेरणास्रोत का काम करता किन्तु यहाँ तो स्थिति इसके विपरीत है।

शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए सर्वशिक्षा, सभी के लिए शिक्षा, शिक्षा गारंटी योजना, बालिका शिक्षा के क्षेत्र में संचालित विविध कार्यक्रम आदि सभी की सार्थकता इन बातों पर आंकी जानी चाहिए कि प्राथमिक शिक्षा की सार्थकता और गुणवत्ता में कितना इजाफा हो रहा है। प्रबुद्ध समाज में इस व्यवस्था के प्रति कितनी आस्था बढ़ी है तथा हमारे विद्यालय आम जनता में कितने लोकप्रिय हुए हैं। अभिभावकों के रूचि—रूझान को आकृष्ट करने में कितनी सफलता मिली है और निजी स्कूलों की ओर उनके पलायन को किस हद तक रोका जा सका है। पाठ्यक्रम को कितना प्रतिस्पर्धी स्वरूप दिया गया है तथा शिक्षण कितना प्रभावी बनाया जा सका है। कार्य संस्कृति व संसाधनों के प्रयोग में कितना सुधार हुआ है। उक्त सब बातों के परे यह भी विश्लेषण करना होगा कि कितने बच्चों को तथाकथित पब्लिक स्कूलों से पल्ला छुड़ाकर सरकारी विद्यालयों में नामांकित किया जा सका है तथा कितने शिक्षकों और शिक्षा जगत से जुड़े अधिकारी कर्मचारियों ने अपने बच्चों को इन विद्यालयों में प्रवेश दिलाना उचित समझा है। अच्छे अवसर और विकल्प का लाम उठाना निःसंदेह अच्छा है, किन्तु सरकारी तंत्र में स्वयं उसमें कार्यरत लोगों की ही निष्ठा न होना और पलायन एक विकट प्रश्न चिहन खड़ा करता है।

विद्यालय में बच्चों के मध्याह्न आहार की व्यवस्था में सारा समय व ऊर्जा खर्च हो यह महत्वपूर्ण नहीं है। जिस लक्ष्य के लिए यह किया जा रहा है वह पूर्ण हो यह महत्वपूर्ण है। साधन और साध्य का अन्तर समझना होगा। गरीबों को भोजन वितरण का कार्य तो समाज कल्याण विभाग या कोई अन्य पृथक से भी कर सकता है। विद्यालयों का काम प्रभावी शिक्षा देना और बच्चों के भविष्य के लिए उपयोगी

दिशा प्रदान करना है। छात्र, अभिभावक और शिक्षकों को एक इकाई के रूप में कैसे बाँघा जाय?

गांधी जी की गहरी सोच कहें या उनकी दूरदृष्टि, उन्होंने आजादी से पूर्व जिस बुनियादी शिक्षा की संकल्पना की थी वह आज भी हमारे राष्ट्रीय धरातल के अनुरूप है। जिन बातों को आज का शिक्षा जगत् कौशल विकास, शिक्षा में श्रम का महत्व, व्यावसायिक शिक्षा, पर्यावरणीय संबोध, एकीकृत शिक्षण आदि अनेक नामों से जानता है वे गांधीजी की बुनियादी शिक्षा के मूल बिन्दु थे।

गाँधीजी के शब्दों में 'मैं भारत के लिए अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा के सिद्धांत को दृढ़तापूर्वक मानता हूं। मैं यह भी मानता हूं कि इस लक्ष्य को पाने का सिर्फ यही एक रास्ता है कि हम बच्चों को कोई उपयोगी उद्योग सिखायें और उसके द्वारा उसकी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करें ऐसा करने से गांवों के लगातार बढ़ रहे नाश की प्रक्रिया रूकेगी और ऐसी न्यायपूर्ण समाज व्यवस्था की नींव पड़ेगी जिससे अमीरों और गरीबों के अस्वाभाविक विभेद की गुंजाइश नहीं होगी।"

"मेरा मत है कि सच्ची शिक्षा हाथ, पैर, नाक, कान आदि अंगों के ठीक अभ्यास और शिक्षण से ही हो सकती है। मनुष्य न कोरी बुद्धि है, न केवल स्थूल शरीर और न केवल हृदय या आत्मा ही। सम्पूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिए तीनों के उचित व एक रस मेल की जरूरत होती है और यही शिक्षा की सही व्यवस्था है।"

अस्तु, वर्तमान में हम प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में जिन नवाचारी शिक्षण विधियों पर प्रयोग कर रहे हैं उनका मूल्यांकन और सतत् परीक्षण जरूरी है और यह देखना है कि उनका कितना सकारात्मक असर हो रहा है। हो भी रहा है अथवा नहीं?

योजनाओं को विविध नाम देने और उन पर निरा धन खर्च करने से काम नहीं चलेगा। धरातल पर कुछ ठोस फलित दिखाई दे, मुख्य बात यह है। सर्वशिक्षा हो अथवा शिक्षा गारण्टी योजना ऑकड़े पूरा करने से काम कैसे चलेगा। गुणात्मक उपलब्धि प्रमुख बिन्दु है। कक्षा पॉच का छात्र सरल इमला न लिख सके सरल पाठ पढ़ ही न सके तो इससे क्या लाभ होने वाला है, जैसा कि समय-समय परसर्वेक्षण रिपोर्टों से आभास होता है।

अपव्यय और अवरोधन की समस्या बनी रहे तो क्या लाम? शिक्षा की चुनौती—नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य 1985 में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि, "शिक्षा की योजना बनाने वाले कुछ लोग यह तर्क प्रस्तुत करते है कि जैसे ही एक विशेष अनुपात में नामांकन कर लिये जायेंगे वैसे ही यह वचनबद्धता पूरी हो जाएगी। यह विचार स्वीकार करने योग्य नहीं है। शिक्षा केवल एक अनुष्ठान नहीं है जो नामांकन मात्र से पूरा कर लिया जाय।"

इसलिए शिक्षा को प्रभावी और परक भी बनाना होगा। कौशल विकास, श्रम का महत्व, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना, पार्यावरणीय सोच जागृत करना, पारस्परिक भाईचारे की भावना जगाना जैसे कार्यकलापों से शिक्षा को गतिशील बनाया जा सकता है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में संचालित कार्यक्रमों का गंभीरता से मूल्यांकन करना होगा। हाल ही में उत्तराखंड शासन ने संभवतः यह निर्णय लिया है कि शिक्षा गारण्टी केन्द्र स्वैच्छिक संस्थाओं से संचालित न होकर शासकीय स्तर से ही संचालित होंगे, अच्छी बात है। कौन संचालित करे यह महत्वपूर्ण नहीं है, केन्द्रों का सफल संचालन कैसे हो यह महत्वपूर्ण है।

## शिक्षा का बदलता स्वरूप

डाॅ0 डी.डी.जोशी,

सामाजिक विकास एवं राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की सदा से ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मानव मात्र की प्रगति का यह एक सशक्त उपकरण है। किसी भी राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक एवं तकनीकी विकास बिना सुव्यवस्थित एवं उपयुक्त शिक्षा के सम्भव नहीं है।

प्राचीन काल में दी जाने वाली शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास में अनूठी छाप छोड़ देती थी। वह मात्र संग्रहीत तथ्यों, भौतिक संसाधनों आदि की यथावत जानकारी न देकर शिक्षार्थी के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर देती थी। उसका भावनात्मक, संवेगात्मक, रागात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास इस प्रकार कर दिया जाता था कि उसमें वास्तव में ज्ञान की दिव्यता, गहनता, प्रखरता मानव जीवन की समझ एवं कर्तव्यबोध स्वयं स्फूर्त हो उठता था। उसके व्यवहार में नम्रता, सहजता, सरलता, पवित्रता, निष्पक्षता, सदाचार, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा, बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह एवं सद्भाव तथा समस्त मानवीय जीवन मूल्य प्रतिबिम्बित हो उठते थे। वस्तुतः उस समय जो शिक्षा दी जाती थी वह एक ऐसी विद्या थी जो संस्कृत के इस श्लोक को सार्थक करती थी।

विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनाद्धर्मः ततः सुखम्।।

अर्थात विद्या नम्रता देती है, नम्रता से उसमे पात्रता आती है। सत्पात्र बनने पर उसे धन प्राप्त होता है। धन से धार्मिक कार्य (सत्कार्य) सम्पन्न होते हैं। इस प्रकार वह जीवन में सुख प्राप्त करता है।

शिक्षा के माध्यम से जहां व्यक्ति के शारीरिक विकास को गति मिलती है, वहीं विद्या के माध्यम से उसकी आध्यात्मिक (आन्तरिक रहस्यात्मक) अनुभूतियों द्वारा आत्मा के अप्रतिम विकास को यथेष्ठ गति मिलती है। व्यक्ति को चरित्रवान एवं सुसंस्कारी बनाने में, उसके नैतिक तथा आध्यात्मिक उन्नयन में विद्या का आदिकाल से ही महान योगदान रहा है। इस प्रकार की विद्या भारत में तब गुरूकुलों में एवं नालन्दा व तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में दी जाती थी। भारतीय संस्कृति पर जब बाहरी विध्वशकारी आक्रमण हुए तो यहां की शिक्षा व्यवस्था भी नष्ट भ्रष्ट हो गई और धीरे—धीरे इसके स्वरूप में परिवर्तन आता गया। समस्या जीविकोपार्जन की होने लगी। प्राचीन कालीन आश्रम पद्धित में दी जाने वाली विद्या लुप्त सी हो गयी और जो शिक्षा दी जाने लगी उसने शिक्षार्थी को यथेष्ठ बुद्धिमान एवं चतुर बना दिया तािक वह अपनी भौतिक जानकारी एवं चतुराई के बल पर जीवन यापन के अनेक सुख—सुविधा के साधन जुटाने में सक्षम हो सके।

भौतिक सम्पन्नता अर्जित करने में इसी शिक्षा के बल पर वह निरंतर सफल होता चला गया। आज शिक्षा का यह स्वरूप पाश्चात्य देशों में बहुत फल फूल रहा है। जिस कारण वहाँ पर भौतिक सम्पन्नता भी भव्य होती जा रहीं है। धरा एवं गगन पर नित नये—नये अविष्कार हो रहे हैं। तकनीक उद्योग एवं विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर नये—नये आविष्कारों को चमत्कार देखने को मिल रहे हैं।

यह सब होते हुए भी आज के तथाकथित शिक्षित एवं उच्च शिक्षित लोगों का जीवन नाना प्रकार

की चिन्ता और तनाव से आक्रान्त है। जिस कारण अनेक शारीरिक एवं मानसिक रोगों से ये ग्रसित होते जा रहे हैं। इनके जीवन में सुख शान्ति सिमटते जा रही है जिस कारण ये पुनः शान्ति की खोज में भारतीय संस्कृति की ओर उन्मुख हो रहे हैं और आन्तरिक सुख शान्ति हेतु प्राचीन भारतीय संस्कृति के सद्ग्रंथों से विद्या प्राप्त करने में शेष जीवन अर्पित कर रहे हैं।

अस्तु शिक्षा के इस बदलते परिवेश में आज आये दिन नये—नये प्रयोग हो रहे हैं। जीवन के यथार्थ को समझते हुए इसे सर्वोपयोगी बनाते हुए शिक्षा के वास्तविक स्वरूप की ओर पुनः प्रत्यावर्तित होने के लिये शिक्षाविद आतुर हैं और पाठ्यक्रम में कुछ इस प्रकार से परिवर्तन करने में जुटे हैं ताकि यह शिक्षा ऐसी बन सके जो भौतिक जानकारी देने के साथ—साथ आध्यात्मिक विद्या की ओर लोगों को ले जा सके और इससे लोगों को ज्ञान के साथ—साथ सुख तथा शान्ति प्राप्त हो सके।

## सुभाषितानिः

"यदि चाहों तो सौ वर्ष जीने की इच्छा करों, जितनी भी सांसारिक वासनाएं हैं, सबका भोग कर लों, पर हाँ उन सबको ब्रह्ममय देखों, यदि जीना चाहों तो दीर्घकाल तक सेवापूर्ण, आनन्दपूर्ण और क्रियाशील जीवन बिताने की इच्छा करों।"

"मुझे विश्वास है कि ईश्वर उस व्यक्ति को तो क्षमा कर सकता है जो अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है और आस्था नहीं रखता किन्तु वह उसे क्षमा नहीं करेगा जो उसको दी हुई शक्ति (बुद्धि) का उपयोग किये बिना ही विश्वास कर लेता है।"

"ईश्वर को सगुण रूप में दो ही प्रकार के लोग नहीं पूजते हैं — एक नरपशु, जिसका कोई धर्म नहीं है तथा अपनी मानवीय प्रकृति के बन्धनों को अतिक्रमण कर चुकने वाला परमहंस।"

"मैं पूर्णतः एक सच्चा ईमानदार पुरूष हूँ और मुझमें सबसे बड़ा दोष यही है कि मैं अपने देश से केवल अधिक और बहुत अधिक प्रेम करता हूँ।"

''यदि मैं चाहूँ तो अपना सारा जीवन ऐशो—आराम में बिता सकता हूँ, परन्तु मैं सन्यासी हूँ और हे भारत तुम्हारे अवगुणों के होते हुए भी तुमसे प्यार करता हूँ।''

स्वामी विवेकानन्द

## पाथमिक शिक्षा की दुर्दशा

कृष्णानन्द चौबे

बालक प्रकृति की श्रेष्ठतम कृति एवं अनमोल देन है। बालक निर्दोश, सहज, सरल एवं निर्विकारी है। उस पर न कोई छाया है न ही वह पूर्वाग्रह से ग्रसित। अतः वह ईश्वर की साक्षात प्रति मूर्ति है। वह निर्मल है, अतः जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। बालक के भविष्य की दिशा निश्चित करने हेतु शिक्षा एक माध्यम के रूप में कार्य करती है। शिक्षा वह सुनिश्चित प्रक्रिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार व विचारों में परिवर्तन एवं परिमार्जन होता है। शिक्षा के प्रभाव से ही बालक समुन्नत सामाजिक प्राणी बनता है।

देशकाल एवं परिस्थिति के अनुकूल शिक्षा का अर्थ एवं स्वरूप परिवर्तित होता है। प्राचीन काल में शिक्षण एवं प्रशिक्षण की सुदृढ़ व्यवस्था थी, क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम हैजो समाज एवं राष्ट्र को आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन एवं सम्बल प्रदान करता है। उस समय औपचारिक शिक्षा गुरूकुलों में ऋषियों-मुनियों द्वारा सभी वर्ग के शिष्यों को समभाव एवं निर्पेक्ष ढंग से दी जाती थी। गरीब, अमीर, राजा, रंक सभी के बच्चे समान व्यवहार के पात्र थे। उस काल में अध्ययन के लिए निर्धारित मानदण्ड थे। मेघा, सदाचारण, अनुशासन एवं लगन। साथ ही अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम संत, महात्मा, व्यास, पुरोहित, मन्दिर तथा तीर्थस्थान थे जो जन सामान्य को प्रतिपल सचेत करते थे। कालान्तर में समायानुसार परिवर्तन होने लगा। मुस्लिम काल में गुरूकुल व्यवस्था पर कुठाराघात होने लगा। वे समाप्त होने लगे। शेष बची व्यवस्था अंग्रेजों ने ध्वस्त की। अंग्रेजों का उद्देश्य शासन तंत्र के पुर्जे और अंग्रेजी शासकों के सहायक पैदा करना था। इसके लिए अंग्रेजों ने अपनी शिक्षण संस्थाएं खोली। विद्यालयी शिक्षा को सामान्यतया तीन स्तरों में बांटा गया है। पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक तथा माध्यमिक। पूर्व माध्यमिक शैशवावस्था से सम्बन्धित है। वस्तुतः इस शिक्षा का उदय सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुआ था। किन्तु वर्तमान में औद्योगिकीकरण, नगरीकरण तथा पाश्चात्य करण की वृद्धि ने नर्सरी शिक्षा पर अधिक बल दिया। अब इस स्तर के शैक्षिक महत्व को समझा जाने लगा है। इस देश में शिक्षा के उत्थान के लिए गठित प्रायः सभी आयोगों ने इसकी महत्ता को स्वीकारा। शोधकर्ताओं ने भी यह सिद्ध कर दिया कि बच्चे की मानसिक, शारीरिक, समाजिक, नैतिक तथा संवेदात्मक विकास की दृष्टि से तीन से सात साल तक के वर्ण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है तथा भावी जीवन की आधार शिला भी है। अतः इस आधार पर विशेष ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है।

सामान्यतया शैशवावस्था में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं का मूलकारक भी पूर्व विद्यालयी काल में उचित निर्देशन, अच्छा वातावरण, उपयुक्त सुविधाओं का प्राप्त न होना होता है। अब इस उम्र के बच्चों को अधिक निर्देशन तथा योग्य वातावरण देने की आवश्यकता है किन्तु इस स्तर की शिक्षा महत्वपूर्ण होते हुए भी अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा हैं। केन्द्र एवं राज्य सरकारें उच्च शिक्षा के लिए अधिक ध्यान दे रही हैं। नींव की कमजोरी की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कारण स्पष्ट है कि इन वातानुकूलित कक्षों में नीति निर्धारकों में बच्चे तो सुविधा सम्पन्न विद्यालयों में अध्ययन करते (28)

हैं। प्राथमिक विद्यालयों की दशा व प्राथमिक शिक्षा के स्तर के लिए उत्तरदायी भी ये ही लोग हैं। न भवन, न बैठने की उचित व्यवस्था। नहीं पर्याप्त अध्यावक। साथ ही इन विद्यालयों की देख-रेख की व्यवस्था उचित नहीं कही जा सकती। अध्यापकों को मकान गणना, जनगणना, आर्थिक सर्वे, मतदाता सूची आदि-आदि कार्यों में ही लगाया जाता है। जिस कारण इनके कार्य दिवस अध्यापन के लिए कितने मिलते है, इन नीति-निर्धारकों को सोचना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यहां प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय अपनी वकत खो चुके हैं। अध्यापक शायद ही विद्यालय आते हैं। इन पर कड़ी नजर रखी जाय तथा सतत औपचारीकी के विरुद्ध कटोर कार्यवाही की जाय। शिक्षक संघों की गतिविधियों को भी नियंत्रित करना होगा ताकि इनका आश्रय लेकर अनुशासन के दोषी शिक्षक अपनी गतिविधियां जारी न रख सकें।

शिक्षा का उददेश्य व्यक्ति को एक प्रबुद्ध, सुसम्य एवं राष्ट्रभक्त नागरिक बनाने के साथ-साथ कर्मठ नेता, कृशल प्रशासक, प्रकाण्ड शिक्षाविद एवं विधि तथा विज्ञान विशेषज्ञ पैदा करना है। अतः अध्यापक वर्ग विचार करें कि क्या हम इस गुरूतर दायित्व का निर्वहन योग्य रीति से कर रहे हैं। इस ओर उदासीनता से राष्ट्र के अस्तित्व को खतरा पैदा हो सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त प्रदूषण को दर करने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता है राजनीतिक इच्छा शक्ति की।



सुश्री अदिती (शाल में) के साथ साविद्या पदाधिकारी एवं अन्य सदस्य

डुंगरासेठी प्राथमिक विद्यालय में छठी कक्षा के छात्रों में बैग/इेस व अन्य सामग्री वितरण



## आदर्श प्राथमिक विद्यालय, कुलेठी, चम्पावत

आशा पाण्डेय,

स्वयं सेवी संस्था हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति द्वारा विगत चार वर्षों से प्रा0 पा0 कुलेठी चम्पावत के बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर प्रयास किये जा रहा हैं।

उक्त विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है तथा अभिभावक गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले हैं। संस्था द्वारा यहाँ के छात्र/छात्राओं को पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं के समकक्ष लाने पर विचार किया गया। इसी क्रम में अपने संसाधन इस विद्यालय को दिये। वर्तमान में इस विद्यालय में संस्थान द्वारा तीन पूर्ण कालिक अध्यापक व एक अंशकालिक अध्यापक नियुक्त हैं।

इन शिक्षकों द्वारा सामान्य शिक्षण कार्य के अलावा कम्प्यूटर खेलकूद, संगीत आदि विभिन्न विषयों में कुशल बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा बच्चों को समय—समय पर यूनीफोर्म, बैग, व्यायाम—वेश, खेलकूद सामग्री, बॉलीबॉल, फुटबॉल, कम्प्यूटर, संगीत वाद्य यन्त्र, झूले व पुस्तकालय में संस्था द्वारा संग्रहीत है।

संस्था द्वारा समय—समय पर स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है। बच्चों को टीकें लगाये जाते हैं। मध्यान्ह भोजन के बाद प्रत्येक छात्र/छात्रा को Liv. 52 व कैल्सियम की गोलियाँ दी जाती हैं, तािक बच्चे स्वस्थ व निरोग रह सकें। सामान्य दुर्घटना के लिये विद्यालय में तात्कािलक चिकित्सा की व्यवस्था है जोिक सम्भवतः पूरे प्रदेश के किसी भी सरकारी प्राथमिक विद्यालय में नहीं है। छात्र—छात्राओं की उपस्थिति नियमित रहे इसके प्रयास किये जाते हैं। इसी क्रम में प्रत्येक छात्र/छात्रा को बरसाती दी गयी हैं। तािक वर्षा होने पर भी बच्चे आ जा सकें।

संस्था के द्वारा दिये जा रहे इस सहयोग को देखते हुए क्षेत्र के जागरूक अभिभावकों द्वारा अपने पाल्यों को इस विद्यालय में प्रवेश कराया जा रहा है।

संस्था के इस अनुकरणीय कार्य से बच्चों के साथ-साथ अभिभावक भी लाभान्वित हो रहे हैं। कुलेठी विद्यालय की (अवलोकन और संस्तुतियाँ) (दिसम्बर, 5 से 10 तक, 2005) संजय बिष्ट, एम.एस.यू लॉनिसंग

- अभिभावक, अध्यापक एवं विद्यार्थी सम्मेलन
   माता पिता एवं अभिभावक बच्चों एवं समुदाय की शैक्षिक प्रक्रिया में भागीदारी अवश्य करें।
- स्कूल रिजस्टर- स्कूल रिजस्टर में अभिभावकों को अपने विचारों को व्यक्त करने के लिये प्रेरित किया जाय। स्कूल के अच्छे क्रिया कलापों तथा सुधार सम्बन्धी विचार भी लिखे जायें।
- अभिभावक विद्यार्थी दिवस मनाना
   समय
   समय
- प्रातःकालीन सभा– प्रातः कालीन सभा में अभिभावकों को बुलाया जाय जब इस सभा में बच्चों के

अच्छे कार्यों की प्रशंसा की जाती है।

- 5. छोटे बच्चें शौच के स्थान का प्रयोग कैसे करें:, साफ रखें और यह भी बताया जाये कि शौंच स्थल को ठीक प्रकार से प्रयोग करें। बच्चों का शौच के लिए जंगल जाना ठीक नहीं, माता पिता को घर में ही यह हिदायत देनी चाहिए। आरम्भ से ही बच्चों में जो आदतें पड़ जाती हैं वे बड़े होने पर भी बनी रहती हैं। बच्चों को बताएं कि अपने गांव शहर को साफ रखें और स्वच्छ रखना है।
- 6. छात्रों को कार्य देना— कक्षा आरम्भ करने से पहले कक्षा दो या चार या पाँच के छात्रों का कक्षा में पढ़ाना शुरू करने के पहले पट्टी तैयार करना प्रयोग करना और काम करने के बाद लौटालना, दीवार घड़ी ठीक से रखना आदि सिखाया जाय और यह कार्य एक सूची बनाकर कक्षा के प्रत्येक छात्र को क्रमानुसार दिया जाय। छात्रों को बार—बार उसके बारे में बताया जाय जब तक कि वे ठीक ढंग से यह कार्य करना सीख न लें।
- 7. छात्रों की रोज की शिकायतों का लेख जोखा रिजस्टर में लिखें। छात्रों को यह एहसास करने के लिये बार—बार उनका नाम रिजस्टर में लिखा जा रहा है। यह उनके लिए अच्छी बात नहीं। शिकायत दर्ज करने वाले रिजस्टर के आधार पर उसे डांटे नहीं और न ही प्रताड़ित करें अन्यथा उनमें हीनता का भाव आ सकता है।
- 8. जो बच्चे शिष्ट व्यवहार नहीं करते उन्हें कक्षा में अलग बैठाया जाय अन्य छात्रों के साथ कुछ समय के लिये मिलने जुलने न दे ताकि वह अपने अभद्र व्यवहार में सुधार कर सकें।
- 9. छात्र की गलती को सबके सामने न बताकर अलग से उसे बताएं और समझाएं।
- 10. यह कार्य हर सप्ताह अध्यापक विद्यार्थी मिलकर करेंगे। छात्र का मजाक न करें क्योंकि इससे उसमें नकारात्मक सोच जागृत हो सकता है। इसके लिए उसे एक स्वस्थ वातावरण दिया जाये।
- 11. कठोर दण्ड की अपेक्षा हल्का और कम से कम दिया जाय एक ऐसा वातावरण बनाएं कि सभ्य एवं शिष्टाचार के अनुसार छात्र व्यवहार करना सीख जाएं। उसके परिवर्तित व्यवहार के लिये उसकी प्रशंसा करें।
- 12. छात्रों की उपस्थिति आरम्भ में ही अध्यापक ले ले और उक्त काम में अधिक समय व्यतीत न करे।
- 13. छोटे बच्चों में अच्छी आदतें विकसित करें उन्हें अंग्रेजियत तथा धर्म विशेष सम्बन्धी कविताएं याद न करायी जायें। उन्हें वे ही कविताएं और गीत सिखाएं जिससे उनमें जीवन के प्रति सकारात्मक सोच उत्पन्न हो, खाद्यान्न कैसे उगाएं अपने गाँव को स्वच्छ कैसे रखें सिर के बाल और अपने शरीर को किस प्रकार स्वच्छ रखें आदि बातें गीत कविता के माध्यम से सिखाएं।
- 14. बच्चों को सीधी पंक्तियों में लिखाना सीखने के लिये चार तरह से उलट पलटने वाली श्याम पट्टियों का प्रयोग किया जाए।
- 15. कक्षा का और विद्यालय का प्रांगण साफ सुधरा रखें इसके लिये कूड़ेदान या गढ्ढे बनाएं। एक-एक करके जब वे भर जाएं तो उन्हें पाट दें। कुछ समय बाद वह कूड़ा खाद का काम

- करेगा। उसे विद्यालय या बगीचा, खेत, गमले आदि में प्रयोग कर स्कूल के वातावरण को सुन्दर बनाएं। सप्ताह/माह/वर्ष का लेखा-जोखा एक रजिस्टर में रखें कि कितनी बेकार की सामग्री खाद बनी और प्रयोग में लाई गयी।
- जो कोई भी औजार आदि प्रयोग किये जाते हैं, उनका लेखा रखा जाये और इस काम को बच्चों से कराया जाय ताकि वे खेल खेल में गणित, गिनना, जोड़ना सीख सकें। यह कार्य गणित की कक्षा में किया जा सकता है।
- बच्चों के जन्म दिवस का लेखा रखा जाय- उनका जन्मदिन मनाया गया है। यह आंगन बाड़ी से ही शुरू किया जाय। कई गांव के बच्चे यह नहीं जानते कि उनका जन्म दिन कब मनाया जाता
- बच्चों को पोषक खाद्य पदार्थ के गुण बताये जायें। भारत में बच्चों को बहुत ही घटिया किरम के खाद्यान्न एवं फलादि वितरित किये जाते है। स्वास्थ्य के लिये पोषक तत्व वाले पदार्थ खाद्य सामग्री कौन-कौन सी है। इससे अवगत कराया जाय और उनसे रोज दो फल-खाने पीने की सामग्री लाने को कहा जाय। आगामी वर्षों में खाद्य पदार्थ एवं फलादि वस्तुएं स्कूल के बाग और खेतों से प्राप्त हों ऐसा प्रयास किया जाय।
- अपनी भाषा में बोलें– छात्रों को अपनी भाषा में बोलने को कहें ताकि उनमें आत्म अभिव्यक्ति का विश्वास जागे। इस सम्बन्ध में उन्हें समझाएं भी। बच्चे शब्दों को ठीक से बोल नहीं पाते हिचिकचाते हैं व धीरे बोलते हुए देखें जाते हैं जो उनमें आत्वविश्वास की कमी बताता है। अतः उन्हें शुद्ध भाषा में सही उच्चारण से एवं बेहिचक जोर से बोलने को कहें। इसके लिये बच्चों से प्रार्थना स्थल पर सभी को क्रमानुसार बोलने को कहा जाये और बार-बार इस प्रक्रिया को अध्यापक दोहरायें। अध्यापक दायित्व पूर्ण ढंग से नित्य छात्रों को बातों के माध्यम से अपनी ओर उनमें रूझान जागृत कर भाषा को सही ढंग से समझने और सही ढंग से अपनी बात कहने की क्षमता एवं आत्मविश्वास को विकसित करें।
- कक्षा सूची के अनुसार बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार सराहें। उनकी भावनाओं की कद्र करें और हीन भावना वाले बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर उनका आत्मबल बढ़ाएं। जो बच्चे कक्षा में कक्षा के सामान्य उम्र की अपेक्षा अधिक लम्बे या छोट होते हैं उन्हें समझाएं कि समयानुसार सब ठीक हो जाता है। कक्षा में अधिक लम्बे या छोटे होने से हीनता की भावना न आने दें।
- )अ) छात्रों के समूह में बाधक बनकर कार्य करना न सीखें। एक कक्षा में या सभी छात्रों का एक स्थल पर एकत्र होने के स्थान या कोई छात्र समूह को सम्बोधन कर रहा हो तो किसी को बीच में बात नहीं करनी चाहिए। यदि किसी विद्यार्थी को समझाया जा रहा है तो धीमी आवाज में समझाएं। ऐसे करने से सभी एकत्र विद्यार्थियों का ध्यान बाधित नहीं होगा।

- प्रेरित करें- छोटे बच्चों को मारने, धमकाने या कोई कठोर सजा देने के बजाय उनकी पीठ थपथपाकर कोई रचनात्मक कार्य करने को कहें। स. नाम लेकर बुलाना– बच्चों को एक दूसरे का नाम जानना सिखाएं और एक दूसरे का नाम लेकर बुलाएं या बात करें।
- 22. बच्चों से कूड़ेदान के प्रयोग को कहें- सन्तरे के छिलके आदि वस्तुए इधर-उधर न फेंकने दें। विद्यालय के मैदान को स्वच्छ रखने को कहें।
- सरस्वती यात्राएं- बच्चों को ग्रामीण परिवेश से बाहर लाकर पास-पड़ोस, शहर या शहर के बाहर घुमाने का प्रयास करें। यह कार्यक्रम एक दिन या कई दिनों का बनाया जा सकता है।
- प्राकृतिक संपदा और भौगोलिक परिस्थितियों से अवगत कराने के लिए कभी–कभी पर्वतारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया जाये।
- शैक्षिक योग्यता के अनुसार स्थान- छोटे बच्चों की शैक्षिक योग्यता के अनुसार उन्हें अंक न देकर ग्रेड दिये जाएं। छोटे बच्चों को एच,यू,आर. आदि इस प्रकार के समूह में बांटकर जिसका ग्रेड से कोई सम्बन्ध न हो चार या पांच ग्रेड के कुछ छोटे बच्चों को प्रथम ग्रेड दिया जाए ताकि वे एक ही समूह में आ जाएं।
  - सरल विश्वसनीय और रोबस्ट शब्दावली बनाकर उन्हें टंकण कार्य सिखाएं और कम्प्यूटर में माउस क्या है यह भी छोटे बच्चों को समझाएं।
- छोटे बच्चों को एक्स-रे यंत्र, तकनीकी अभिलेख या अन्य कोई व्यवसायिक एवं किसी कार्य विशेष से सम्बन्धित बातें बताएं और उनसे सम्बन्धी स्थानों को भी दिखायें।
- इससे बच्चों की चिंतन शक्ति उत्प्रेरित होगी, जिज्ञासा बढ़ेगी और वे भविष्य के प्रति जागरूक होंगे।
- बच्चों को अग्नि शमन यंत्र को दिखाये।
- मस्तिष्क उद्वेलन विषय क्रिया का लाभ करायें ताकि उनके सोचने और चिंतन शक्ति के विकास का समृचित अवसर मिल सके।



समिति द्वारा आयोजित नेत्र शिविर में अपनी माँ के उपचार के लिए परिवार के साथ डाँ० तिवारी

## आशा फॉर एजुकेशन एक परिचय

आशा फॉर एजुकेशन – संक्षेप में 'आशा' नामक संस्था की स्थापना सन् 1991 में हुयी थी। इस संस्था की पहली शाखा बर्कले विश्वविद्यालय अमरिका में शोध कार्यरत तीन युवाओं – सर्वश्री दीपक गुप्ता, वी.जे.पी. श्रीवात्सवोय एवं संदीप पाण्डे द्वारा की गई। अपने देश में अल्प-सुविधा प्राप्त वर्ग के अन्दर सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन लाने तथा इस वर्ग में छिपी प्रतिभाओं में उत्प्रेरण हेतु यह संस्था लम्बे समय से कार्यरत है। आज 'आशा' की 66 से अधिक शाखायें विश्वभर में कार्यरत हैं। इस संस्था को दिया जाने वाला दान कर से मुक्त रखा गया है। संस्था के सारे कार्य विदेशों में स्वयं सेवियों द्वारा स्वेच्छा से बगैर किसी वेतन के किये जाते हैं। लेखक ने स्वयं स्टैनफोर्ड और सिलीकौन वैली की शाखाओं में प्रति सप्ताह एक-दो घण्टे स्वयं सेवकों को संस्था के कार्यों में व्यस्त देखा है। विभिन्न प्रस्तावों पर विचार करना, उनके लिये धन आदि की व्यवस्था करना तथा इसी प्रकार के विभिन्न कार्यों को स्वेच्छा से जिम्मेदारी पूर्वक सम्पादित होते देखना बहुत महत्वपूर्ण अनुभव होता है।

'आशा' की प्रत्येक शाखा में एक कार्यकारिणी में प्रधान शाखा संयोजक, प्रस्ताव (प्रोजेक्ट) संयोजक, कोषाध्यक्ष एवं कम्प्यूटर के माध्यम का उपयोग करने हेतु वैबमास्टर होते हैं।'आशा' वैबसाइटे &webmaster@ashanet.org |

## प्रमुख क्रियाकलाप :-

'आशा' के क्रियाकलाप का क्षेत्र विस्तृत है। बच्चों की शिक्षा के लिये 2008 में संस्था के कुछ कार्यक्षेत्र निम्न हैं :-

'आशा' संस्था मलिन बस्तियों में रहने वाले शिशुओं, अपराधी तथा पूर्व में अपराधी रहे बच्चों, दिलतों एवं जनजातियों के बालकों, कुष्ट रोगी तथा कुष्ट रोगियों की संतानों, खानाबदोशों के बच्चों, वेश्यावृत्ति में संलग्न लोगों के बाल-बच्चों की देखरेख करती हैं। साथ ही इस संस्था का प्रयत्न यह भी रहता है कि बाल श्रम को समाप्त किया जाये, पंगु तथा मानसिक रूप से अविकसित एवं असक्त बच्चों, हीमोफीलिया जैसी व्याधियों से प्रभावित बच्चों, समाज से बहिष्कृत संतानों, असुरक्षित बालिकाओं तथा अन्य अनाथ लोगों की समस्याओं का निराकरण किया जाये।

## 'आशा' के सम्बन्धित कार्य 'एवं शाखाऐं :--

अपने उक्त कार्यों को सम्पन्न करने के साथ 'आशा' समानान्तर रूप से ग्राम समुदायों में साधन सृजन, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की शिक्षा, उपचारात्मक शिक्षा, पारम्परिक स्कूलों में शिशुओं की उपस्थिति तथा व्यावसायिक शिक्षा के विकास में भी योगदान देती है। संस्था की वित्तीय दृष्टि से अभी तक विश्वमर में कार्यरत कुल 66 शाखाओं में से प्रमुख शाखायें सियाटल, सिलिकौन वैली, न्यूयोर्क सिटी — न्यूजर्सी, अरिजौना, सेन्ट्रल न्यू जर्सी, शिकागो, कोलारेडो, लॉस एंजिल्स, एम.आई.टी., विंलगस्टन, एम.एच.वी., वाशिंगटन डी.सी., वर्कले, स्टेनफर्ड, आशा मास्टर एवं वर्क एण्ड अवर आदि हैं। भारत में समग्र शिक्षा तथा आधारिक शिक्षा के लिए कार्यशील समूहों में 'आशा एजुकेशन' निम्नांकित शर्तों और पद्मितयों के साथ कार्य करती है :-

आशा उन्हीं समहों के साथ कार्य करती है जो वर्गहीन समाज, धर्मनिरपेक्षता पर विश्वास करते हैं तथा राजनीतिक सम्बद्धताओं के आग्रही नहीं हैं सांथ ही जाति, वर्ग, धर्म और लिंग के आधार पर मनुष्यों में कोई विभेद नहीं बरतते। 'आशा' से सम्बद्ध होने के लिए सर्वप्रथम एक प्रस्ताव संस्था के नाम भेजा जाना चाहिए। इस प्रस्ताव को बनाते समय योजना-प्रारूप (प्रोजेक्टं) में उददेश्य, क्रियान्वयन के चरण, क्रियान्वयन में सम्मिलित कार्यकर्ताओं की संख्या तथा प्रत्येक चरण के लिए वित्तीय व्यवस्था आदि विषयों का विस्तार से उल्लेख किया जाना चाहिए। योजना का प्रारूप नियोजित, सूसंचालित तथा मूलतः संस्थापक संस्था द्वारा वहन किये जाने योग्य होना चाहिए। इस योजना को बाह्य सहायता की निर्भरता अल्प होनी चाहिए। शिक्षा के बिन्दू को बल देते हुए योजना का प्रारूप समुदाय हेतू सामान्यतः लाभकारी होना चाहिए। प्रारूप का लाभ व्यापक रूप से सभी वर्गों तक पहुंचना चाहिए तथा इससे अधिकतम बच्चों का लाभ होना चाहिए। जिन प्रस्तावों की मांग अमेरिकी एक हजार डॉलर से कम होती है उन्हें प्रमुखता दी जाती है। प्रस्ताव भेजने वाली संस्थायें जो 'आशा' से एक वर्ष से कम समय के लिए सहायता की अपेक्षा रखती हैं उन्हें वरीयता दी जाती है। प्रस्ताव भेजने वाले समृह से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने प्रस्ताव का सम्पूर्ण लेखा-जोखा तथा अन्य वांछित विवरण , फोटो चित्र तथा प्रस्तावित कार्य की प्रगति 'आशा' द्वारा जब भी मांगी जायेगी प्रस्तुत करेगा। सामान्यतः वर्ष में चार बार से अधिक ऐसी रिपोर्ट भेजी जाने की आवश्यकता नहीं होगी।

## भारत स्थित संस्थाओं तथा उनके प्रमुखों के लिए निर्देश :-

'आशा' के ''बाल सहायता'' (सपोर्ट ए चाइल्ड) कार्यक्रम से सहायता प्राप्त करने के लिए भारत स्थित संस्था प्रमुखों अथवा संस्थाओं को निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए :-

इस बात को वरीयता दी जानी चाहिए कि 'आशा' द्वारा दी गयी सम्पूर्ण आर्थिक सहायता मूलतः बच्चों के कल्याणार्थ ही उपयोग की जाये। इस कार्य में ट्यूशन, बाल छात्रवृत्ति, पुस्तकों सहित शिक्षा हेत् आवश्यक अन्य वस्तूयं, परिवहन, भोजन, वस्त्र, मनोरंजन समाहित हैं। अनावश्यक और अनुपयोगी पुस्तकें इस व्यय में सम्मिलित नहीं होनी चाहिए। दोहरी सहायताओं से बचा जाना चाहिए। किसी अन्य संस्था से सहायता बिना हमारी अनुमति के नहीं ली जानी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर सहायता प्राप्त छात्र और 'आशा' के बीच में सम्पर्क सूत्र के रूप में किसी प्रमुख को कार्य करना चाहिए। बालक को मिलने वाली सहायता की सततता स्कूल में पढ़ाई जारी रखने तथा 'आशा' के इस आशय के निर्देश पर निर्भर करेगी। 'आशा' इस सम्बन्ध में संस्था के सम्बन्धित व्यक्ति की संस्तुति तथा 'आशा' के द्वारा भेजे गये प्रतिनिधि की रिपोर्ट पर निर्भर रहती है।

## आशा द्वारा बच्चों को दी जाने वाली सहायता की स्वीकृति का प्रारूप :-

'आशा' भारत की बुनियादी शिक्षा सम्बन्धी गतिविधियों को आर्थिक सहायता प्रदान करती है। प्रत्येक वर्ष 'आशा' द्वारा अनेकानेक प्रस्तावों पर विचार किया जाता है। हमें ये प्रस्ताव अनेक स्रोतों से प्राप्त होते हैं जैसे कि भारत में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं तथा 'आशा' के अन्यान्य स्रोतों एवं सीधे सम्पर्क से।

प्राप्त प्रस्तावों के मूल्यांकन तथा उन पर लिये जाने वाले निर्णयों की प्रक्रिया निम्न प्रकार होती

है :
प्रथमतः विस्तृत प्रारूप में संस्था तथा प्रस्तुत प्रस्ताव के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की जाती
है। द्वितीय चरण में प्रस्ताव प्राप्त होने पर 'आशा' दो स्वयंसेवियों को नियुक्त करती है जो प्राथमिक तथा
उत्तर प्राथमिक प्रमुखों के रूप में कार्य करते हैं। प्रस्ताव के मुख्य सम्पर्क सूत्र यही नियुक्त स्वयं सेवक
होते हैं। उक्त चरण के उपरान्त 'आशा' द्वारा नियुक्त स्वयंसेवी कार्यक्षेत्र का निरीक्षण करता है। प्रत्येक
होते हैं। उक्त चरण के उपरान्त 'आशा' द्वारा नियुक्त स्वयंसेवी कार्यक्षेत्र का निरीक्षण करेता है। प्रत्येक
माह आयोजित मीटिंग में नियुक्त प्रमुख स्वयंसेवी प्रस्ताव तथा कार्यक्षेत्र निरीक्षण की रिपोर्ट के आधार
पर यह निर्णय करता है कि प्रस्ताव आर्थिक सहायता हेतु प्रस्तुत किये जाने योग्य है अथवा नहीं। उक्त
पर यह निर्णय करता है कि प्रस्ताव आर्थिक सहायता हेतु प्रस्तुत किया जाता है और पाँच व्यक्तियों के
चरणों के उपरान्त द्वितीय मीटिंग में प्रस्तावों पर विचार—विमर्श किया जाता है और पाँच व्यक्तियों के
कोरम में दो तिहाई मतों के बहुमत से यह निर्धारित किया जाता है कि प्रस्ताव को सहायता दी जानी
चाहिए अथवा नहीं। इन प्रस्तावों में पूर्ण सहायता और आंशिक सहायता के लिए भी विचार होता है और
उक्तानुसार मतों द्वारा ही इस सन्दर्भ में भी निर्णय लिया जाता है। यह ध्यान रखा जाता है कि जो लोग
उक्तानुसार मतों द्वारा ही इस सन्दर्भ में भी निर्णय लिया जाता है। यह ध्यान रखा जाता है कि जो लोग
सम्बन्धित विचाराधीन प्रस्ताव को भी भली प्रकार समझते हैं।

इस प्रकार समाज के अभावग्रस्त तबके की भावी पीढ़ी में यह संस्था अपने नामानुसार आशा का संचार करने का महत् कार्य कर रही है।



निमार्ण सामग्री ढोता हुआ गधा



कुलेठी में सर्वशिक्षा अभियान द्वारा प्रदत्त शिक्षण कक्ष के निर्माण के लिए अभिभावक (कारीगर), प्रधानाचार्या के साथ

# फाउन्डेशन फौर एक्सीलंस ( ĀFE) छात्रवृतियाँ

AFE अमेरिका में पंजीकत एक संस्था है जिसका उददेश्य भारत में शैक्षिक रूप से प्रतिभाशाली तथा आर्थिक रूप से पिछडे छात्र / छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान करना है जिससे ये छात्र अपनी प्रतिभाओं का विकास कर समाज के विभिन्न क्षेत्रों के विकास में सहयोग कर सके तथा अपने तथा अपने परिवार के जीवन स्तर में सुधार ला सके। इस संस्था की स्थापना एक प्रवासी भारतीय डा. प्रमुगोयल ने 1994 में की थी कालान्तर में अमेरिका में बसे प्रवासी भारतीय प्रमुख रुप से कनवर रेखी तथा अन्य 300 प्रवासी इस संस्था को अपना योगदान दे रहे है। 1994 से 2004 तक भारत में 7380 से अधिक छात्र / छात्रायें इस संस्था से छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कर चुके हैं। जिनमें से 1788 छात्र / छात्रायें अपनी उच्च शिक्षा समाप्त कर विप्रो इन्फोसिस, टी.सी.एस., कोग्नीजेंट, एच.सी.एल, रिलायंस तथा लारसेन एण्ड दुब्रो जैसी नामी गिरामी कम्पनियों में कार्यरत हैं। इस संस्था का कार्यालय भारत में मुंबई में स्थित है। साविद्या के सचिव 2004 से AFE के कोआर्डिनेटर हैं उनको 4-5 फैसिलेटर्स का सहयोग प्राप्त है। अमेरिका में उत्तराखंड के प्रवासी डा० के०सी० जोशी का इस संस्था के उत्तराखण्ड में संवर्धन में सराहनीय योगदान है। उनके प्रयास का ही परिणाम है कि 2005 से शन्ताक्लास में उत्तराखंड के प्रवासी धन एकत्र कर उससे उत्तराखण्ड के छात्र / छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर रहे है। हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति ने भी पिछले तीन वर्षों से छात्र / छात्राओं को इस योजना के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया है। 2005.06 में जहाँ उत्तराखण्ड विशेष रुप से कुमांऊ का एक छात्र लामान्वित हुआ वहीं इस संस्था से जुड़े तमाम ब्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रयास से 2007.08 मे पूरे उत्तराखण्ड में 66 तथा 2007.08 में 158 से भी अधिक छात्र-छात्राएं से लाभान्वित हुए हैं, छात्र / छात्राओं की जानकारी के लिए कुछ बिन्द् महत्वपूर्ण हैं।

आर्थिक सहायता के रूप में छात्रवृत्तियां दो वर्ष के लिए ऐसे छात्रों को प्रदान की जाती हैं जो हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर +2 में विज्ञान विषय पढ़ रहे हो। ऐसे छात्र जिन्होंने राजकीय विद्यालय स्थानीय शासन के विद्यालय किसी निगम द्धारा संचालित विद्यालय से हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की हो तथा राज्य बोर्ड की परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र के अंको का 80% अथवा अधिक अंक प्राप्त किए हो इस छात्रवृति के पात्र हैं या ऐसे छात्र जिन्होंने 80% प्राप्त नहीं किये हो किन्तु विशेष योग्यता,स्टार अथवा जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया हो। सरकारी सहायता प्राप्त गैर सरकारी विद्यालय से हाईस्कूल उत्तीर्ण छात्रों के अंक उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले विद्यालय के अंकों का 85% होना चाहिए।

सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय गैर सरकारी विद्यालय से 10वीं उत्तीर्ण छात्रों के अभिभावकों की वार्षिक आय रु० 10,000 से कम होनी चाहिए राजकीय निगम स्कूल के छात्रों के लिए यह नियम लागू नही होगा। छात्रवृतियां स्वीकृत करते समय अभिभावकों की शिक्षा तथा उनके व्यवसाय को भी ध्यान में रखा जाता है। AFE का मानना है कि उच्च शिक्षा के लिए प्रतिभाशाली छात्रों को भारत में बैकों से ऋण की सुविधा है यदि छात्र, छात्रायें चाहें तो संस्था के AFE बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए उन्हे

सहायता कर सकती है तथा उनके अध्ययन की अवधि तक बैंक ऋण के ब्याज का भुगतान कर सकती है।

छात्र छात्राएं अधिक जानकारी के लिए जून/जुलाई में नीचे दिये गये नम्बरों पर संपर्क कर सकते हैं—

हल्द्वानी:- डॉ० के.के. पाण्डे 05946-220840

श्री आर.डी. जोशी 05946-260118

श्री आई.डी. पाण्डे 05946-280384

नैनीताल:- डॉ०कविता पाण्डे 05942-247539

अल्मोडा:- डॉ० एस.के. जोशी 05962-233577

चम्पावत:- श्री कमलेश रस्यारा 05965-230844, 230876



कुलेठी प्राथमिक विद्यालय परिसर में ग्राम सभापति, सचिव, जिला अधिकारी आदि



कुलेठी प्राथमिक विद्यालय में ड्रेस वितरण करते हुए जिला एवं बेसिक शिक्षा अधिकारी



कुलेठी प्राथमिक विद्यालय में रंगारंग कार्यक्रम



कुलेठी प्राथमिक विद्यालय के समारोग में विद्यार्थी एवं आस-पास के ग्रामवासी

## <sup>7</sup> जल की उपयोगिता मुख्य बिन्दु

कृष्ण कुमार मिश्र

हम सभी पानी के सामान्य उपयोगों से परिचित हैं। यह वास्तव में सभी प्रयोजनों की वस्तु है। हम पानी से अपनी प्यास बुझाते हैं, पानी में खाना पकाते हैं तथा पानी से अपने कपड़े धोते हैं। गांव का एक व्यक्ति प्रतिदिन औसतन 10 से 50 लीटर पानी का इस्तेमाल करता है। प्रयोग में लाये जाने वाले पानी की मात्रा पानी की उपलब्धता पर निर्भर करती हैं पानी आनंद एवं खुशियों में भी इतना ही अहम् है। पानी के फव्वारे, निदयां तथा कलकल—छलछल की मधुर ध्विन के साथ बहने वाले झरने सदैव से मानव के लिए आकर्षण एवं प्ररेणा के स्रोत रहे हैं। पानी का उपयोग मानव तक ही सीमित नहीं है, बिल्क जानवरों के लिए भी वह उतना ही उपयोगी है। पानी सभी प्राणियों एवं वनस्पितयों के लिए अपिरहार्य है।

उद्योगों में पानी की व्यापक उपयोगिता है। रसायन, कपड़ा, चमड़ा, प्लास्टिक, लोहा एवं स्टील, कागज एवं लुगदी के साथ तमाम अन्य उद्योग—धंधों में पानी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। तापविद्युत, जलविद्युत तथा नाभिकीय संयत्रों में पानी शीतलक के रूप में प्रयुक्त होता है।

पानी का सबसे अधिक उपयोग खेतों में सिंचाई के लिए होता है।

पहले की सभ्यताओं में धूपघड़ी की तरह समय के लिए जलघड़ी का प्रयोग होता था। ऐसा विश्वास किया जाता है पहली सदी ईसवी में प्रतिभाशाली यूनानी अलेक्जैंडि्या के हेरो ने भाप की शक्ति के लिए पानी का प्रयोग किया। ईसा पूर्व पहली सदी में मध्यपूर्व में अनाज पीसने के लिए पनचक्की का इस्तेमाल होता था।

सन् 1698 में थामस सेवरी द्वारा भाप के इंजन का आविष्कार विज्ञान के इतिहास में मील का एक पत्थर है। उन्होंने खदानों से पानी निकालने के लिए पंप बनाया और उसका पेटेंट कराया।

ऊर्जा उत्पादन में पानी की काफी अधिक मात्रा ऊंचाई से बड़ी—बड़ी टरबाइनों पर गिराई ज़ाती है। विद्युत पैदा करने के लिए पानी की स्थितिज ऊर्जा का टरबाइन चलाने में प्रयोग होता है। नहरों द्वारा बांधों में एकत्रित जल को दूर स्थित खेतों की सिंचाई एवं औद्यानिक इस्तेमाल के लिए भेजा जाता है। हमारे देश में जलविद्युत की काफी क्षमता एवं संभावनाएं हैं, लेकिन अभी हम उसके केवल एक अंश का ही दोहन कर रहे हैं। जलमार्ग परिवहन में काफी उपयोगी होने के साथ—साथ सस्ता भी है।

हमारे देश में लगभग 30 प्रतिशत कृषि भूमि को ही सिंचाई की सुविधा प्राप्त है। बाकी खेती वर्षा पर ही निर्भर हैं इस बात के प्रयास किये जा रहे हैं कि अगले 15—20 वर्षों में इसे बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक कर दिया जाये। यही कारण है कि हमारे देश की कृषि अधिकतर मानसून पर निर्भर है। जब भी कभी मानसून ठीक नहीं होता उस साल देश की अर्थव्यवस्था को झटका लगता है तथा आर्थिक लक्ष्य पिछड़ जाते हैं। हिमालय से निकलने वाली गंगा और यमुना जैसी हिमपोषित नदियां मैदानी इलाकों की जीवन—रेखा हैं। इन नदियों द्वारा लाये गये तलछट के जमा होने से मैदानों की मिट्टी दोमट होती है। यह काफी उपजाऊ होती है। यही कारण है कि इस उर्वर क्षेत्र में मानव प्राचीन काल से रहता आया

हमारे देश में लगभग 6 लाख गांव हैं। इनमें से हर छठे गांव में पीने के साफ पानी की व्यवस्था नहीं है। सुदूर स्थित कुछ क्षेत्रों में तो स्थिति भयावह हैं गांवों में सामान्यतया कुएं और तालाब ही जल के स्रोत होते हैं। प्रायः इनकी उचित देखरेख भी नहीं होती। ऐसे में ये स्रोत अधिकतर प्रदूषित ही होते हैं। गांववासी घेरलू कामों के लिए पानी के इन्हीं स्रोतों का प्रयोग करते हैं। उद्योगीकरण ने साफ-सफाई की स्थिति को और बिगाड़ दिया है। औद्योगिक क्षेत्रों में तो भूमिगत जल तक के प्रदूषित हो जाने की आशंका व्यक्त की गयी है। ऐसे में पीने के पानी का संकट पैदा हो जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। हमारे देश में जलप्रदूषण की स्थिति बहुत ही दयनीय और निराशाजनक है। गंगा नदी जो एक समय अपने शुद्ध और पावन जल के लिए विख्यात थी, आज प्रदूषण की चपेट में हैं। अध्ययन से पता चला है कि गंगा का पानी केवल पीने के ही अयोग्य नहीं, बल्कि अब यह नहाने के काबिल भी नहीं रहा है गंगा में डुबकी लगाने से चर्मरोग हो जाने की आशंका व्यक्त की गयी है।

हम खाना पकाने के लिए पानी का प्रयोग करते हैं। पानी का तापमान बढ़ाने के लिए काफी ऊष्मा की जरूरत होती है। गरम करने के दौरान पानी द्वारा ली गयी ऊष्मा भोजन पकाने में प्रयुक्त होती हैं पकाने में लगने वाले समय और ईंधन बचाने के लिए हम प्रेशर कुकर का इस्तेमाल करते हैं। प्रेशर कुकर में दाब का मान वायुमंडलीय दाब से अधिक होता है। ऊंचे दाब पर पानी अधिक तापमान पर उबलता है। प्रेशर कुकर में यह करीब 120 डिग्री से. पर उबलता है। यही कारण है कि प्रेशर कुकर में भोजन जल्दी पकता है। ऊंचे स्थानों जैसे पहाड़ों पर खाना देर से पकता हैं ऐसा इसलिए क्योंकि ऊंचाई पर वायुमंडलीय दाब कम होता है। कम दाब पर पानी कम तापमान पर उबलता हैं यानी यह 100 डिग्री से. से कम ताप पर ही उबलने लगता है। आमतौर पर हम खाना पकाने से पहले अनाज एवं दालों को पानी में भिगो देते हैं। इससे वह जल्दी पकता है और समय तथा ईंधन की बचत होती है। भिगोने से अन्न कण पानी सोखकर फूल जाते हैं। इससे वे ज्यादा ऊष्मा अवशोषित करते हैं और जल्दी पक जाते 常日

पानी का एक अन्य विशिष्ट प्रयोग साफ-सफाई एवं धुलाई में होता है। हम अपने कपड़ों तथा दूसरी घरेलू चीजों को पानी से साफ करते हैं।

शुद्ध जल स्वादहीन होता हैं पानी में हमें जो स्वाद मिलता है वह उसमें घुली हुई अशुद्धियों के

कारण होता है। पानी प्रकृति की सबसे अनमोल भेंट है जो जीवन के हर क्षेत्र में तथा हर कदम पर मानव के लिए उपयोगी है। हमें चाहिए कि हम इसे संरक्षित रखें तथा इसे प्रदूषित होने से बचायें। साथ ही साथ यह भी सुनिश्चित करना होगा कि देश के दूरस्थ स्थानों में रहने वाले हर व्यक्ति को पीने का साफ पानी मिले।

हिमालयन वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति

			7/35			
प्रमुर	ख कार्यकारिणी सदस्य	य	संस्था (	(हिमवत्स) कार्यकारिणी सदस्य चम्पावत	Ŧ	
1.	डा० के.के.पाण्डे	अध्यक्ष	1.	श्री नारायणराम टम्टा		
2.	श्री श्याम सिंह धनक	उपाध्यक्ष	2.	श्री रमेश चन्द्र पुनेठा		
3.	डा० एच.डी.बिष्ट	सचिव एवं	3.	श्री दीवान सिंह बोहरा		
		प्रमुख कार्यकारी	4.	श्री दिनेश चन्द्र बिश्ट		
4.	श्री चन्द्र बल्लभ पाण्डे	कोषाध्यक्ष	5.	श्री बिमल पाण्डेय		
· 5.	डा० जी.बी.बिष्ट	ऑडिटर	6.	श्री जगदीश सिंह अधिकारी		
6.	श्री कमलेश रस्यारा	सदस्य	7.	श्री कमलेश कुमार रस्यारा		
7.	श्री दीवान सिंह	सदस्य		श्री गोविन्द बल्लभ रस्यारा (संरक्षक)		
21.71	71277	7	16 3	ctors-		
	सदस्य	1	29.	डा० डी.एन.पौडियाल	1	
1.	श्री आर.डी. जोशी		30.	डा० ए.बी. मवार, वरिष्ठ फिजिशियन		
2.	श्री आर.के. पन्त	- 24//23017	31.	डा० एम.सी. तिवाड़ी		
3.	श्री भवानी दत्त खर्कवाल Rtd (DPG) द्रार्थ			डा० पी.सी. गुरुरानी, वरिष्ठ रेडियोलोजिस्ट		
4.	श्री आई.डी. पाण्डे ( Deta Chaf Commotor)			डा० एस.एस.भ गरद्वाज, वरिष्ठ पैथोलौजिस्ट		
12.	श्री वी.वी. तिवारी ( ध्यान द्वार द्वार हुन )			डा० मीना भट्ट, वरिष्ठ स्त्री एवं प्रसूति		
13.		hotel stockist)	· ·	रोग विशेशज्ञ		
14.	श्रीमती आशा बिष्ट					
15.	श्री निर्मला बिष्ट \	eachers				
16.	श्री रजनी जोशी			छात्र/अभिभावक/अध्यापक समिति		
17.	श्रा बा.एस. बिष्ट		कुलेठी,	चम्पावत 🖟		
18.	श्री जी.बी. रस्यारा	7				
19.	9	-7	अध्यक्ष—	श्री त्रिलोचन जोशी (अभिभावक)		
20.	श्री बी.डी. बिष्ट		सचिव -	,		
21.	श्री आर.सी. पन्त	) -	सदस्य-	कु० लता जोशी (छात्रा)		
22.	श्री ओम प्रकाश शाह ।			सूरज नेगी (छात्र)		
23.	श्री दिनेश चन्द्र बिष्ट ८	- <del></del>		कु० मृणालिनी (छात्रा)		
24.	श्रीमती माया त्रिपाठी । १२	,		श्री विनोद राम (अभिभावक)		
25.	श्री गणेश पन्त			श्री कैलाश सिंह (अभिभावक)		
26.	श्री मुक्तेश पन्त	D 12 - 1 - 2/2		श्रीमती मंजू पाण्डेय (अध्यापिका)		
27.	3	R- Baul Yr		श्रीमती जीवन्ती देवी (अभिभावक)		
28.	डा० जी.बी. बिष्ट, वरिष्ठ	नत्र शल्यक । 🕥		श्रीमती कुन्ती पाण्डेय (अभिभावक)		
		(41	)			

# तिवारी मेटरनिटी सेंटर एण्ड नर्सिंग होम

मुखानी, हल्द्वानी नैनीताल उत्तराखण्ड कुमायूं के प्रवेश द्वार हल्द्वानी में

डॉ. मोहन तिवारी एम.बी.बी.एस., एम.डी. मेडि. फिजिशिसल हृदय रोग एवं डायविटीज विशेषज्ञ मो. 9412087823

डॉ. श्रीमती जयश्री तिवारी एम.बी.बी.एस., एम.एस. प्रसृती एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ फोन- 263674 ; (O) 263817 ; (H)

### स्विधाएं:-

ई.सी.जी. अल्टासाउण्ड 1. सभी प्रकार के आपरेशन, डिलीवरी, सिजेरियन, मेडिकल एबोर्शन।

2. बच्चों के टीके (D.PT., B.C.G, O.P.V., Hepatitus- A, Hepatitus-B,

M.M.MR., NM. Vac., Chickenpox)

3. अल्ट्रासाउण्ड, कोल्पोस्कोपी द्वारा बच्चेदानी के मुंह की जांच।

पल्स आक्सीमीटर 4. Pathology, E.C.G., Cardiac Moniter की सुविधा भी उपलब्ध

## With Best Compliments From

## **Tewari Maternity Center and Nursing Home**

Mukhani, Haldwani NainiTal Uttaranchal

(In the Gateway to Kumaon)

## Dr. Mohan Tiwari

Dr. Smt Jayshri Tewari MBBS, MS

MBBS,MD medicine Physician, Heart Disease and Diabetes

Gynochologist and womens DiseaseSpecialist Phone 263674 (O) (R263817 ((H)

Mobile: 9412087823

Facilities:-

**ECG** 

1 All kinds of operations, delivery, ceaserian, medical abortion 2 Childrens vaccinationy D.PT., B.C.G, O.P.V., Hepatitis- A,

Hepatitis-B , NM . Vac., Chickenpox)

Ultrasound: **Pulse Oximeter**  3 Ultrasound, colposcopy examination of uterus Nabulizer

4. Pathology, E.C.G., Cardiac Monitor facilities are available

# दि नैनीताल बैंक लिमिटेड

(प्रधान कार्यालय: जी.बी. पन्त मार्ग, नैनीताल) समस्त सम्मानित ग्राहकों व शुभचिन्तकों को

# हार्दिक शुभकामनायें

आकर्षक जमा योजनाएं :- आकर्षक ब्याज।

लोन योजनाएं :- विभिन्न जरूरतों के लिए

विभिन्न योजनाएं।

अन्य योजनाएं :- जीवन बीमा, सामान्य बीमा, मेडिक्लेम, क्रेडिट कार्ड, म्युच्युअल फंड, वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर आदि।

> उत्तराखण्ड का एक प्रमुख वाणिज्यिक बैंक। बैंक द्वारा बैंकिंग सविधा से वंचित लोगों के लिए 'नैनी स्मार्ट कार्ड योजना' लागु की गई है।

visit us at :- www. Nainitalbank.co.in email us at :nainitalbank@vahoo.co.in

है स्मारिका के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

शिव नारायण

श्याम लाल गुप्ता

चौक बाजार, हल्द्वानी फोन- 250-0473

स्मारिका के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनायें

मित्रों की दुकान

जामा मस्जिद के पास, नया बाजार, हल्द्वानी सभी प्रकार की यूनिफार्म के बिक्रेता

फोन- 250045 (दु.) 320532 (नि.) मोबा.- 9412035753 4

With Best Compliments From

# Satyam Entrerprises Dehradoon

With Best Compliments From

P C GURURANI

Senior Radiologist, B D Pande Hospital NainiTal

With Best Compliments From

A B Mowar , Senior Physian
B D Pande, Hospital
NainiTal

# BHARAT OPTICAL CENTRE

Authorized dealer Bausch & Lomb

RAMPA COMPLAX, KALADHUNGI ROAD CHAURAHA, HALDWANI (NAINITAL) (U.K.) –263 139 PH.: 05946-254818

## FACILITIER;

- Contact Lenses
- Goggles
- \* Frames
- & Low vision add

## ASK US:

- ♦ Would you prefer to have thinner lighter lenses?
- Would you like to protect your eyes from harmful U.V. Radiations?
- ♦ Would you like reflection fee coating?
- ♦ Do you want to get rid of the line in those bifocals and try a progressive lens?

## With Best Compliments From

## Dynotech Instruments Pvt. Ltd.

101, DDA Building No 1, Plot No 1, District Centre, Janakpuri New Delhi-110058 Ph: 91-11-2561 2270, Fax: 91-11-41589356, website: www.dynotech.in

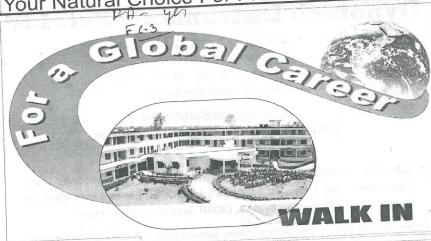
A Complete Solutionof Lasers & Optoelectronics : Includes

- Lasers Pulsed Nd: YAG Laser (Nano Second & Pico Second), Ultra Fast Laser, Dye Laser, Ti: Sapphire Laser, DPSS Laser, Laser Marking System, Laser Engraving System, LIDAR System. Diode Arrays
- Imaging Systems Terahertz System, Cooled CCD Camera, ICCD Camera, Line Scan Camera, Intensifier High Speed Cameras, Fluorescence Life Time Imaging. Streak Camera, Spatial Light Modulator
- Laser Power & Energy Measurement Laser Power & Energy Meter, Laser Beam Analysis System
- Spectrometers Monochromators, Spectrograph, Fiber Optic Spectrometer, UV/VIS/IR Detectors,
- Tables -Vibration Isolation Table, Bread Board
- Fiber Optics Optical Fiber, Fiber Optics Polisher, Connectors, Couplers, Adaptors, Attenuators
- Motor Operated Motion Positioning System, Motorized Stages.

Optics - Lenses, Mirrors, Beam Splitter, Beam Expander, Laser Rods Crystals Such As BBO, KTP, KDP, LBO

() F-C-3 form / Constat x 07-08 X

# Your Natural Choice For Professional Career



## **Courses Offered**

MBA MCA B. Tech BHMCT DHMCT BCA BBA M.LIB. B.LIB.

MAT QUALIFIED MBA UTU entrance test qualified MCA

AIEEE merit.

UTU entrance exam qualified J-EEP qualified

BHMCT DHMCT

BCA BBA

GIBIL

B. Tech.

M. Lib. B. Lib. & I. Sc. KU entrance exam qualified Graduate in any discipline with 45% marks Graduate in any discipline with Maths as one of the subjects at 10+2 level & on the basic of entrance exam

10+2 with maths 10+2 in any discipline. 10+2 in any discipline.

10+2 with maths atleast 45% marks (on the basis 10+2 in any discipline (45% on the basis of merit).

B. Lib. With 45% marks Graduate in any discipline with 40% marks Graduate in any discipline with 45 % marks

## **Your Success Our Commitmen**

Shiksha Nagar, Kaladhungi Road, Haldwani - 263139 Ph.: (05946) 238200, 01, 02 Fax: 238205 Website: www.amrapaliinstitute.ac.in



जिलाधिकारी एवं सचिव कुलेठी, चम्पावत में (2006)



जिलाधिकारी एवं अध्यक्ष श्री के.के. पाण्डे, डंगरासेठी में (2007)



कुलेठी स्कूल में श्रमदान (2006)







हर स्कुल के बच्चों के चारों सदनों के पहचान चिन्ह (2007)



आचार्य एवं श्री आर.डी. जोशी कम्प्यूटर दान के समय (2006)



सुभाष नगर, हल्ह्यानी में स्वास्थ्य शिविर के अवसर पर सचिव एवं न.पा.अ. श्री हेमना बगड्वाल ( 2007 )

Space Donated by Sudhir Sharma, Director, Dynotech Instruments



With Best Compliments From

# VHB Medisciences Ltd.

Everyone speaks quality, we practice it

**A VHB Group Company**